मुंबई(महाराष्ट्र) से प्रकाशित
हिन्दी दैनिक
उत्तरशक्ति
हर खबर निष्पक्षता के साथ
मुंबई
वर्षः 9 अंक 46
रविवार, 23 अगस्त 2026
मूल्य 3 रुपए, पृष्ठ-6
RNI NO. MAHHIN/2018/76092
email ID- uttarshaktinews@gmail.com
www.uttarshaktinews.com

कांग्रेस वंदे मातरम का वही संस्करण गाती है, जो महात्मा गांधी और पटेल ने तय किया था : खरगे

नई दिल्ली, 22 अगस्त। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने शनिवार को केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार और भाजपा पर ध्रुवीकरण की राजनीति करने का आरोप लगाया और कहा कि कांग्रेस वंदे मातरम का वही संस्करण गाती है, जो महात्मा गांधी तथा सरदार वल्लभभाई पटेल समेत राष्ट्रीय नेताओं ने तय किया था। उन्होंने सवाल किया कि क्या वंदे मातरम्‍ के छोटे संस्करण को तय करने वाले राष्ट्रीय नेता भी राष्ट्रविरोधी थे।

राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष खरगे ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की एक टिप्पणी पर प्रतिक्रिया दी, जिसमें उन्होंने बृहस्पतिवार को कांग्रेस पर तीखा हमला करते हुए कहा था कि वंदे मातरम के केवल दो अंतरे गाने का उसका फैसला राष्ट्रविरोधी है और ऐसा कानून की अनदेखी करते हुए अपने वोट बैंक को खुश करने के लिए किया गया है। खरगे ने कहा, अगर आप इतिहास पढ़ेंगे, तो आपको पता

चलेगा। पंडित नेहरू, महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस और वल्लभभाई पटेल ने मिलकर वंदे मातरम्‍ के अंतरों की संख्या छह से घटाकर दो करने का फैसला किया था और कहा था कि यह देश के लिए बेहतर है। 1937 तक हमें आजादी नहीं मिली थी। उन सभी ने मिलकर यह फैसला किया और हम सभी 90 वर्ष से यही संस्करण गाते रहे हैं। उन्होंने यहां पत्रकारों से बातचीत के दौरान सवाल किया कि जब 90 वर्ष से कोई समस्या नहीं थी, तो अब यह मुद्दा क्यों उठाया जा रहा है। उन्होंने कहा, आप (मोदी) गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तब आपने इसे क्यों नहीं गाया? अब आपको प्रधानमंत्री बने 11-12 साल हो गए हैं, तो आपने अब तक इस मुद्दे पर कुछ क्यों नहीं किया था? कई राज्यों में आपकी भाजपा की सरकारें हैं और आपके मुख्यमंत्री हैं, तो आपने वहां ऐसा क्यों नहीं किया? जब भी आपका मन होता है, आप नए मुद्दे ले आते हैं। उन्होंने कहा, आप (मोदी/भाजपा) ने भी वर्षों तक इसे नहीं गाया, तो क्या आप भी देशद्रोही हैं? वे देश में ध्रुवीकरण की राजनीति कर रहे हैं। यह अच्छा नहीं है, देश के लिए अच्छा नहीं है। हम रहें या न रहें, यह देश स्थायी है। इस देश, संविधान और लोकतंत्र की रक्षा करना हमारी जिम्मेदारी है।

सुप्रीम कोर्ट ने आर्ट ऑफ लिविंग पर लगा 5 करोड़ का जुर्माना हटाया

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन से जुड़ी संस्था व्यक्ति विकास केंद्र की याचिका को स्वीकार करते हुए बड़ा फैसला सुनाया है।

अदालत ने दिल्ली में 2016 में आयोजित वर्ल्ड कल्चर फेस्टिवल के लिए संस्था पर लगाए गए 5 करोड़ रुपए के फाइन को रद कर दिया है। जस्टिस सतीश चंद्र शर्मा और जस्टिस एन. कोटिश्वर सिंह की पीठ ने फैसला सुनाते हुए स्पष्ट किया कि किसी व्यक्ति या संस्था को जिम्मेदार ठहराने के लिए पर्यावरण को हुए नुकसान और उनके काम के बीच सीधा संबंध होना अनिवार्य है।

अदालत ने पाया कि आर्ट ऑफ लिविंग के कार्यक्रम और यमुना के बाढ़ वाले इलाके को पहुंचे नुकसान के बीच ऐसा कोई सीधा संबंध साबित करने वाला सबूत नहीं है। बेंच ने नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के फैसले की आलोचना करते हुए कहा कि ट्रिब्यूनल ने याचिकाकर्ता को अपना पक्ष रखने का पर्याप्त अवसर नहीं दिया और साथ ही अहम जानकारियों को भी नजरअंदाज किया। अदालत ने यह भी नोट किया कार्यक्रम वाली जगह पहले से ही खराब स्थिति में थी। सुप्रीम कोर्ट ने आर्ट ऑफ लिविंग को राहत दी, लेकिन दिल्ली डेवलपमेंट अथॉरिटी (DDA) के रवैये की कड़ी आलोचना की। कोर्ट ने कहा कि जिस तरह DDA ने यमुना के संवेदनशील सक्रिय बाढ़ क्षेत्र में इस तरह के बड़े आयोजन की अनुमति दी, वह बिल्कुल गलत था। DDA अपनी कानूनी जिम्मेदारियों को निभाने में नाकाम रही और उसने पर्यावरण सुरक्षा से जुड़े भरोसे को तोड़ा है। कोर्ट ने DDA को निर्देश दिया है कि वह DDA के आदेश के तहत व्यक्ति विकास केंद्र द्वारा जमा कराए गए 5 करोड़ रुपये तुरंत वापस करे। इसके साथ ही DDA को निर्देश दिया गया है कि वह DDA के दिशानिर्देशों के अनुसार यमुना फ्लडप्लेन को ठीक करने का काम जारी रखे।

कुएं में समरसेबल निकालने उतरे चार लोग जहरीली गैस से बेहोश, तीन की मौत; एक गंभीर

चंदौली, 22 अगस्त। चंदौली जिले के शहाबगंज थाना क्षेत्र के किड़हिरा गांव में शनिवार को उस समय चीख-पुकार मच गई, जब बंद कुएं में फंसा समरसेबल पंप निकालने उतरे चार लोग अचानक जहरीली गैस की चपेट में आकर बेहोश हो गए। आनन-फानन ग्रामीणों और पुलिस की मदद से सभी को बाहर निकालकर अस्पताल पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों ने तीन लोगों को मृत घोषित कर दिया। वहीं चौथे युवक की हालत गंभीर बनी हुई है, जिसका अस्पताल में इलाज जारी है। घटना के बाद से ही गांव में मातमी सन्नाटा और कोहराम पसरा हुआ है।

जानकारी के अनुसार, किड़हिरा गांव में कुएं के भीतर लगे खराब समरसेबल पंप को बाहर निकालने का काम चल रहा था। इसी दौरान

एक-एक कर चार लोग कुएं में उतरे, लेकिन अंदर मौजूद जहरीली गैस के असर से चारों अचेत होकर कुएं के भीतर ही गिर पड़े। कुएं से बाहर किसी हलचल के न होने और पुकारने पर जवाब न मिलने पर बाहर मौजूद लोगों में हड़कंप मच गया।

स्थानीय ग्रामीणों ने तत्काल घटना की सूचना शहाबगंज थाना पुलिस को दी। सूचना मिलते ही पुलिस टीम ग्रामीणों की मदद से राहत व बचाव कार्य में जुट गई। काफी मशक्कत के बाद चारों को कुएं से बाहर निकाला गया। हादसे में जमाल, तौकीर आलम और वारिस अली की मौत हो गई, जिससे परिजनों में चीत्कार मच गया। वहीं हादसे में बचे समशेर की हालत गंभीर बनी हुई है, जिसे तत्काल नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र से जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। घटना के संबंध में पुलिस प्रशासन का कहना है कि प्रथम दृष्टया कुएं में लंबे समय से जमी जहरीली गैस (मीथेन या कार्बन मोनोऑक्साइड) के रिसाव के कारण दम घुटने से यह हादसा हुआ प्रतीत हो रहा है। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर आगे की आवश्यक कानूनी प्रक्रिया शुरू कर दी है और मामले की विस्तृत जांच की जा रही है।

'टेस्ट क्रिकेट को वैभव की जरूरत': द्रविड़ ने सूर्यवंशी के तीनों प्रारूप में खेलने का किया समर्थन

नई दिल्ली, 22 अगस्त। भारत के पूर्व कप्तान राहुल द्रविड़ का मानना है कि टेस्ट क्रिकेट को वैभव सूर्यवंशी जैसे खिलाड़ी की जरूरत है। द्रविड़ ने कहा कि सूर्यवंशी को लाल गेंद क्रिकेट के लिए काफी समय और एक्सपोजर की जरूरत है। वैभव सूर्यवंशी इस बार दलीप ट्रॉफी में ईस्ट जोन की तरफ से खेल रहे हैं। दलीप ट्रॉफी की शुरूआत रविवार से हो रही है। वैभव इस दौरान टीम के उपकप्तान की भूमिका में भी नजर आने वाले हैं।

वैभव सूर्यवंशी क्रिकेट की नई सनसनी बनकर उभरे हैं और उन्होंने आईपीएल 2026 में दमदार प्रदर्शन किया था। वैभव ने इसी साल इंग्लैंड के खिलाफ टी20 अंतरराष्ट्रीय में डेब्यू किया था। वैभव अगले महीने होने वाले एशियाई खेलों के लिए भी भारतीय टीम का हिस्सा हैं। राहुल द्रविड़ जब राजस्थान रॉयल्स के मुख्य कोच थे तो राजस्थान फ्रेंचाइजी ने वैभव को आईपीएल नीलामी में खरीदा था। अब द्रविड़ ने वैभव को टेस्ट क्रिकेट के लिए तैयार बता दिया है।

द्रविड़ ने यूरोपियन टी20 प्रीमियर लीग (ईटीपीएल) के अनावरण के लिए डबलिन में एक इवेंट में कहा, यह बहुत अच्छी बात है कि वैभव को भारत में आईपीएल के जरिए कुछ सीमित ओवर प्रारूप में क्रिकेट खेलने का अनुभव मिल रहा है, लेकिन उन्हें भारतीय घरेलू सिस्टम में वापस जाकर लाल गेंद क्रिकेट खेलने और अपने टेस्ट करियर को आगे बढ़ाने का भी समय मिल रहा है। इस युवा बल्लेबाज को सीमित ओवर और टेस्ट क्रिकेट के

बीच संतुलन बनाने की जरूरत है। हम सभी टेस्ट क्रिकेट को जिंदा देखना चाहते हैं और आगे बढ़ते देखना चाहते हैं। हमें वैभव जैसे खिलाड़ियों की जरूरत है ताकि वे सभी प्रारूप में खेल सकें।

द्रविड़ ने कहा, अच्छी बात यह है कि उसे कुछ समय लगेगा, उसे कुछ अनुभव की जरूरत होगी। उसे बहुत सारा टेस्ट क्रिकेट खेलने का मौका मिलेगा। उसने शायद उतना टेस्ट क्रिकेट नहीं खेला है जितना सीमित ओवर प्रारूप में क्रिकेट खेला है। वह सिर्फ 15 साल का है। मुझे लगता है कि आपको उसे कुछ समय देना होगा और उसके साथ सब्र रखना होगा। जाहिर है वह शुरू से ही बहुत सफल रहा है, लेकिन वह अपने उतार-चढ़ाव से गुजरेगा और मुझे लगता है कि लोगों को उसके साथ सब्र रखना होगा।

द्रविड़ का मानना है कि टी20 मौकों का पीछा करने के बजाय घरेलू टेस्ट क्रिकेट खेलने से बतौर बल्लेबाज वैभव का विकास होगा। उन्होंने कहा, हम सब याद रखें कि वैभव सिर्फ 15 साल के हैं और उन्हें अभी लंबा रास्ता तय करना है। मुझे उम्मीद है कि सूर्यवंशी आखिरकार उच्च स्तर पर लाल गेंद क्रिकेट में कदम रख पाएंगे और इंडिया के लिए सभी प्रारूप के खिलाड़ी बन पाएंगे। यह वैश्विक क्रिकेट के लिए उत्साहजनक होगा। मालूम हो कि सूर्यवंशी ने अब तक सिर्फ आठ प्रथम श्रेणी मैच खेले हैं। उनका औसत 17.25 है। दलीप ट्रॉफी में सूर्यवंशी को कम से कम दो लगातार प्रथम श्रेणी मैच खेलने को मिल सकता है।

देश के 6 राज्यों में बिछेगी 1800 किमी लंबी पाइपलाइन, एलपीजी सप्लाई के लिए सरकार का मास्टरप्लान

नई दिल्ली। तेल क्षेत्र के नियामक ने लगभग सात हजार करोड़ रुपये के अनुमानित निवेश से करीब 1,800 किलोमीटर नई एलपीजी पाइपलाइन बनाने को मंजूरी प्रदान कर दी है। इदेश के 6 राज्यों में बिछेगी 1800 किमी लंबी पाइपलाइन, एलपीजी सप्लाई के लिए सरकार का मास्टरप्लानस से एलपीजी पाइपलाइन नेटवर्क लगभग एक चौथाई बढ़ जाएगा। इससे ईंधन सप्लाई ज्यादा मजबूत होगी और सड़क परिवहन पर उसकी निर्भरता कम होगी। पेट्रोलियम एंड नेचुरल गैस रेगुलेटरी बोर्ड (पीएनजीआरबी) ने तेलंगाना, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, कर्नाटक और गोवा में तीन रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण एलपीजी पाइपलाइन प्रोजेक्ट्स को मंजूरी दी है। सरकारी कंपनी गेल इंडिया लिमिटेड द्वारा विकसित किए जाने वाले इन प्रोजेक्ट्स से पीएनजीआरबी अधिकृत एलपीजी पाइपलाइन नेटवर्क लगभग 7,700 किलोमीटर से बढ़कर करीब 9,500

किलोमीटर हो जाएगा। यह विस्तार ऐसे समय में हो रहा है जब भारत आयातित एलपीजी पर बहुत ज्यादा निर्भर है। बड़ी मात्रा में सप्लाई तटीय आयात टर्मिनलों पर आती है और फिर देशभर के खपत केंद्रों तक पहुंचाई जाती है। उम्मीद है कि बड़ा पाइपलाइन नेटवर्क देश के अंदर एलपीजी पहुंचाने की क्षमता और विश्वसनीयता में सुधार करेगा। हाल ही में मंजूर किए गए तीन प्रोजेक्ट्स में 556 किलोमीटर लंबी चेरलापल्ली (तेलंगाना) से नागपुर (महाराष्ट्र) लाइन, 611 किलोमीटर लंबी झांसी (उत्तर प्रदेश) से सितारगंज (उत्तराखंड) पाइपलाइन और 633 किलोमीटर लंबी शिक्रापुर (महाराष्ट्र) से गोवा और हुबली (कर्नाटक) लाइन।

'जज भगवान नहीं, हर फैसला सही नहीं हो सकता', विदाई समारोह में बोले रिटायर जज संजय करोल

नई दिल्ली, 22 अगस्त। सुप्रीम कोर्ट से सेवानिवृत्त हो रहे जस्टिस संजय करोल ने विदाई संबोधन में कहा कि न्यायाधीश भगवान नहीं हैं और हर फैसला सही होना संभव नहीं है। उन्होंने न्याय में विनम्रता, संवेदनशीलता और आम नागरिक की बात का जिक्र किया। उन्होंने करीब चार दशक के अपने कानूनी सफर को याद करते हुए कहा कि जज बनने के लिए कुछ हद तक विनम्रता और हर केस करने वाले के पीछे के असली इंसान को देखने की काबिलियत होनी चाहिए।

संविधान हमसे सिर्फ. कानून को सही तरीके से लागू करने के लिए नहीं कहता। यह हमसे इसे सही तरीके से लागू करने के लिए कहता है। शायद इसीलिए मुझे हमेशा यह तय करने की ज़िम्मेदारी ज्यादा बड़ी लगी है कि कौन कानूनी तौर पर सही है। उन्होंने कहा कि हम, जज के तौर पर, भगवान नहीं हैं। हम हर फैसला सही नहीं कर पाएँगे। हमारे हाथ में हमेशा आसान थाः सिर्फ. पिटीशनर को नहीं, बल्कि इंसान को देखना। एक पिटीशन आपको सिर्फ. केस के फैक्ट्स बता सकती है, लेकिन यह आपको यह नहीं बता सकती कि इंसान पहले ही क्या खो चुका है या

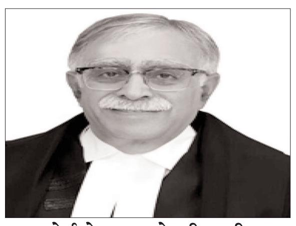

वह कोर्ट से क्या पाने की उम्मीद कर रहा है। जस्टिस करोल ने कहा, और शायद इसीलिए मैंने हमेशा कहा है कि जज करने के लिए एक खास लेवल की विनम्रता की जरूरत होती है। आप को बता दें कि जस्टिस करोल को 6 फरवरी 2023 को सुप्रीम कोर्ट में प्रमोट किया गया था। उनके ऑफिस के आखिरी दिन एक सेरेमोनियल बेंच में CJI कांत और जस्टिस करोल, जॉयमाल्या बागची और वी मोहना शामिल थे।

जस्टिस करोल ने लीगल प्रोफेशन में अपने लगभग चार दशक के सफर पर बात की और कहा कि कोर्टरूम उनके लिए कभी भी सिर्फ एक वर्कप्लेस नहीं रहा, बल्कि खुद से बड़ी और ज्यादा जरूरी किसी चीज के लिए एक जरिया रहा। मैं यह दिखावा नहीं करूंगा कि यह सफर सिर्फ मेरा रहा है। इस कोर्टरूम ने मुझे नहीं छोड़ा है उन्होंने कहा, इसने मुझे सपोर्ट किया है।

TIWARI'S
SARASWATI CLASSES
Since 1992
Parents' First Choice for 34+ Years
Prof. Dr. Dayanand Tiwari
Founder & Academic Director
ADMISSIONS OPEN
9th | 10th | 11th | 12th SCIENCE
NEET | JEE | MHT-CET
10 DAYS FREE DEMO
Attend Classes • Experience Our Teaching
Take Admission After Satisfaction
(No Hidden Conditions)
- 34+ Years of Academic Excellence
- Experienced & Dedicated Faculty
- Personal Attention
- Printed Notes & Regular Tests
- Strong Foundation for Boards & Competitive Exams

Santacruz Branch
101 Sai Chambers,
Opp. Santacruz Railway Station (East),
Near Depot, Santacruz (E), Mumbai-400055

Sion Branch
Opp. SIES College (Old),
Near Gurukripa Hotel,
Sion (West), Mumbai

Limited Seats / Small Batch Size
CALL NOW:
7738007373

DAKS REHAB CENTRE
(PARALYSIS PHYSIOTHERPHY CENTER AND OLD AGE HOME)
Contact us: 9820519851
विल्डिंग नंबर 3, प्लॉट नंबर 3, आदर्श घरकुल सोसायटी सायन कोलीवाडा जीटीबी नगर मुंबई-37
* Stroke/Paralysis/Complete Rehab Centre
* बाहर से आये रोगी और उनके परिजनो के ठहरने कि व्यवस्था
* वृद्ध लोगों के लिए रहने की सुविधा उपलब्ध
* DM/HT/THYROID इन सब से कैसे बचें
* NGO में मिलनेवाली सहायता को लोगों में देना
* चिकिस्ता उपकरणो को किराये और बिक्री सुविधा उपलब्ध
* एम्बुलेंस सेवा उपलब्ध
* पोस्ट ऑपरेटिव रिहैब सेंटर
* मरीजों के लिए घर पर 12 और 24 घंटे जीडीए परिचारक
* विशेषज्ञ डॉक्टरो से ऑनलाइन और ऑफलाइन परामर्श की सुविधा उपलब्ध
* मासिक ईएमआई के आधार पर व्यक्तीयों, परिवारो और माता-पिता के लिए स्वास्थ्य निती की चिकिस्ता सुविधा उपलब्ध

NEW LIGHT CLASSES
TRADITION OF EXCELLENCE
2nd Floor, Sheetal Bldg.
Near Diamond Talkies,
L. T. Road, Borivali (West)
Mumbai - 400 092
Maharashtra
ADMISSIONS OPEN
ALL OVER INDIA
ENROLL NOW

(ONLINE/OFFLINE)
Courses Offered
- Std. XI & XII (Sci.)
- NEET
- JEE (Main & Advance)
- MHT-CET
- Polytechnic & Engg
- Physics and Maths (ICSE, CBSE, ISC)
M: 9833240148 | E: edu@newlightclasses.com | W: www.newlightclasses.com

तुलसीदासः भक्ति, लोकमंगल और जीवन-दर्शन के अमर व्याख्याता

-ललित गर्ग

भारत की संत-परंपरा में गोस्वामी तुलसीदास का स्थान केवल एक महान कवि अथवा रामभक्त के रूप में नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन के लोकनायक और सांस्कृतिक राष्ट्रनायक के रूप में है। श्रावण शुक्ल सप्तमी को मनाई जाने वाली तुलसीदास जयंती हमें उस महापुरुष के स्मरण का अवसर देती है, जिसने रामकथा को राजमहलों और संस्कृत के विद्वत्-वर्ग से निकालकर जन-जन की भाषा, संवेदना और जीवन का हिस्सा बना दिया। तुलसीदास ने भक्ति को केवल पूजा-पद्धति नहीं रहने दिया, उसे चरित्र, मयार्दा, करुणा, सेवा, समन्वय और लोकमंगल का जीवन-मंत्र बना दिया। तुलसीदास का जीवन स्वयं एक अद्भुत आध्यात्मिक यात्रा है। उनका जन्म अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में हुआ। बाल्यकाल में ही माता-पिता का साया छूट गया। जीवन में अभाव और संघर्ष रहे, लेकिन यही संघर्ष आगे चलकर उनकी चेतना के निर्माण की भूमि बने। उनका प्रारंभिक नाम रामबोला बताया जाता है। रामनाम उनके जीवन में केवल एक धार्मिक संबोधन नहीं, बल्कि अस्तित्व का आधार बन गया। आगे चलकर रत्नावली के जीवन-परिवर्तनकारी वचन ने उनके भीतर वैराग्य की ऐसी ज्योति प्रज्वलित की, जिसने सांसारिक आसक्ति को रामभक्ति की विराट धारा में परिवर्तित कर दिया।

तुलसीदास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने भक्ति और जीवन को अलग-अलग खानों में नहीं बांटा। उनके लिए राम मंदिर में प्रतिष्ठित मूर्ति मात्र नहीं हैं। राम सत्य हैं, मयार्दा हैं, नीति हैं, करुणा हैं, शील हैं, शक्ति हैं और लोककल्याण की प्रेरणा हैं। इसलिए तुलसी के राम भारतीय मानस के ऐसे आदर्श बनते हैं, जिनमें ईश्वर और मनुष्य के श्रेष्ठतम गुणों का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। तुलसीदास की अमर कृति रामचरितमानस भारतीय साहित्य और संस्कृति की ऐसी महान उपलब्धि है, जिसकी प्रासंगिकता सदियों के बाद भी कम नहीं हुई। यह केवल रामकथा नहीं है, यह मनुष्य को मनुष्य बनाने वाली जीवन-संहिता है। इसमें परिवार है, समाज है, राजनीति है, राज्यनीति है, कर्तव्य है, त्याग है, मित्रता है, भ्रातृत्व है, करुणा है और सबसे ऊपर धर्म का वह व्यापक स्वरूप है, जो व्यक्ति को स्वयं से ऊपर उठकर लोकमंगल से जोड़ता है। तुलसी ने संस्कृत के गूढ़ आध्यात्मिक ज्ञान को अवधी की सहज और मधुर भाषा में प्रस्तुत करके ज्ञान की सीमाओं को तोड़ा। यही कारण है कि रामचरितमानस केवल पंडितों का ग्रंथ नहीं बना, बल्कि गांव की चौपाल से लेकर नगरों के साहित्यिक मंच तक, मंदिरों से लेकर घरों के आंगन तक जनजीवन का अभिन्न अंग बन गया। तुलसी ने जिस भाषा में लिखा, वह जनता की भाषा थी, जिस कथा को चुना, वह जनमानस की आस्था से जुड़ी थी और जिन मूल्यों को सामने रखा, वे सार्वकालिक थे। इसीलिए तुलसी का साहित्य कालजयी बना।

काशी में उनके ग्रंथ को लेकर मधुसूदन सरस्वती जैसे महान विद्वान ने तुलसी की काव्यप्रतिभा की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि काशी रूपी आनंदवन में तुलसीदास चलते-फिरते तुलसी-वृक्ष हैं और उनकी काव्य-मंजरी पर रामरूपी भ्रमर मंडरा रहा है। यह टिप्पणी केवल प्रशंसा नहीं, बल्कि तुलसी की आध्यात्मिक और साहित्यिक ऊंचाई की स्वीकृति के रूप में देखी जाती है। तुलसीदास की भक्ति निष्क्रिय पलायन की भक्ति नहीं है। वह मनुष्य को कर्म से विमुख नहीं करती, बल्कि कर्तव्य के प्रति जागरूक करती है। उनके राम वन जाते हैं तो कर्तव्य के कारण। भरत राजसत्ता ठुकराते हैं तो भ्रातृप्रेम और त्याग के कारण। हनुमान सेवा करते हैं तो पूर्ण समर्पण के साथ। सीता संकट में भी धैर्य और आत्मबल का परिचय देती हैं। तुलसी के लिए भक्ति का अर्थ है- अहंकार का विसर्जन और अपने भीतर के श्रेष्ठतम मनुष्य का जागरण। उनका रामभक्त स्वयं को ईश्वर के सामने समर्पित करता है, लेकिन संसार से भागता नहीं। वह समाज, परिवार और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों को अधिक गंभीरता से निभाता है। इसीलिए तुलसी की भक्ति में ज्ञान, कर्म और प्रेम का त्रिवेणी-संगम दिखाई देता है।

तुलसीदास को केवल धार्मिक कवि मानना उनके विराट व्यक्तित्व को सीमित करना होगा। उनके साहित्य में तत्कालीन समाज की विसंगतियों, विघटन और नैतिक संकटों की गहरी अनुभूति है। उन्होंने समाज को कोई राजनीतिक घोषणा-पत्र नहीं दिया, बल्कि चरित्र-निर्माण के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन का रास्ता दिखाया। उनके रामराज्य की कल्पना में शासन का उद्देश्य सत्ता नहीं, लोककल्याण है। रामराज्य में व्यक्ति भयमुक्त, सम्मानपूर्ण और संतुलित जीवन जीता है। तुलसी के साहित्य का यह पक्ष आज भी विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि आधुनिक समाज में विकास के साथ-साथ नैतिकता, संवेदना और सामाजिक विश्वास का संकट भी दिखाई देता है। आज परिवार टूट रहे हैं, संबंधों में स्वार्थ बढ़ रहा है, सार्वजनिक जीवन में मयार्दा का क्षरण हो रहा है और व्यक्ति भौतिक उपलब्धियों के बावजूद भीतर से अशांत है। ऐसे समय में तुलसी का साहित्य हमें याद दिलाता है कि सभ्यता की वास्तविक शक्ति उसके चरित्र में होती है, केवल उसकी संपन्नता में नहीं। रामराज्य को केवल किसी प्राचीन शासन-व्यवस्था के रूप में देखना उचित नहीं होगा। यह एक नैतिक और मानवीय व्यवस्था का आदर्श है, जहां शासन लोकहितकारी हो, न्याय निष्पक्ष हो, समाज में परस्पर विश्वास हो और व्यक्ति अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों को भी समझे।

तुलसीदास का कृतित्व अत्यंत व्यापक है। रामचरितमानस, विनय-पत्रिका, कवितावली, गीतावली, दोहावली, कृष्णगीतावली, जानकीमंगल, पार्वतीमंगल, रामलला नहछू, वैराग्यसंदीपनी और हनुमान बाहुक आदि उनकी साहित्यिक प्रतिभा के विविध आयामों को सामने रखते हैं। ह्यविनय-पत्रिका में भक्त का आत्मसमर्पण है तो कवितावली में जीवन और समाज के अनुभवों की तीखी संवेदना भी है। हनुमान बाहुक में व्यक्तिगत पीड़ा और आध्यात्मिक आश्रय का अद्भुत संगम दिखाई देता है। इस दृष्टि से तुलसी केवल रामकथा के कवि नहीं, बल्कि मनुष्य की बाहरी और भीतरी दोनों यात्राओं के कवि हैं। तुलसीदास का सबसे महत्वपूर्ण संदेश समन्वय है। उन्होंने ज्ञान और भक्ति, लोक और शास्त्र, आदर्श और यथार्थ, व्यक्ति और समाज तथा अध्यात्म और व्यवहार के बीच पुल बनाया। उनका साहित्य विभाजन नहीं, समरसता की ओर ले जाता है। उनकी दृष्टि में धर्म संकीर्ण पहचान नहीं, बल्कि जीवन को सत्य, करुणा, संयम और मयार्दा से जोड़ने वाली शक्ति है। यही कारण है कि रामचरितमानस का प्रभाव केवल धार्मिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, उसने भारतीय कला, संगीत, नाटक, लोकपरंपरा, सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक स्मृति को गहराई से प्रभावित किया।

आज तकनीक ने संसार को छोटा कर दिया है, लेकिन मनुष्य का मन कई बार अकेला और अस्थिर होता जा रहा है। सूचना बहुत है, लेकिन विवेक का अभाव दिखाई देता है। संपत्ति बढ़ रही है, लेकिन संतोष घट रहा है। संपर्क बढ़ रहे हैं, लेकिन संबंध कमजोर हो रहे हैं। ऐसे समय में तुलसीदास का संदेश पहले से अधिक प्रासंगिक है। रामचरितमानस हमें सिखाता है कि विकास के साथ मूल्य, शक्ति के साथ विनम्रता, ज्ञान के साथ विवेक और अधिकार के साथ कर्तव्य आवश्यक है। तुलसी का राम हमें भीतर के रावण से लड़ने की प्रेरणा देता है। बाहरी विजय से पहले अंतर्मन की विजय आवश्यक है। तुलसी की यही सबसे बड़ी देन है कि उन्होंने राम को केवल अयोध्या का राजा नहीं रहने दिया, बल्कि भारतीय चेतना के भीतर का आदर्श मनुष्य बना दिया। तुलसीदास का जीवन हमें बताता है कि परिस्थितियां मनुष्य को नहीं बनातीं, बल्कि मनुष्य अपनी चेतना से परिस्थितियों को अर्थ देता है। एक संघर्षशील जीवन से उठकर तुलसी ने ऐसा साहित्य रचा, जिसने भारत की कई पीढ़ियों को संस्कार दिए। तुलसीदास भारतीय संस्कृति की स्मृति मात्र नहीं, उसकी जीवंत चेतना हैं। उनकी भक्ति हमें भीतर की यात्रा कराती है, उनका साहित्य जीवन का विवेक देता है और उनका राम हमें यह विश्वास दिलाता है कि मनुष्य अपने आचरण से स्वयं को ऊंचा उठा सकता है। तुलसी को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम रामचरितमानस को केवल पढ़ें नहीं, अपने जीवन में चरितार्थ करें। यही तुलसी का जीवन-दर्शन है, यही उनके कृतित्व की सार्थकता है और यही आज के अशांत, विभाजित और मूल्य-संकट से जूझते समाज के लिए उनकी सबसे बड़ी प्रासंगिकता भी है।

त्योहारों की मिठास पर महंगाई का साया: चीनी के बढ़ते दामों पर कब लगेगी लगाम?

अशोक भाटिया

भारत में त्योहारों का आगमन केवल सांस्कृतिक उल्लास का प्रतीक नहीं होता, बल्कि यह देश की अर्थव्यवस्था, विशेषकर घरेलू उपभोग और खुदरा बाजार के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। रक्षाबंधन से लेकर दुर्गा पूजा, दिवाली और छठ पूजा तक चलने वाला यह लंबा त्योहारी सीजन देश के आर्थिक चक्र को गति देता है। लेकिन पिछले कुछ समय से इस त्योहारी उल्लास पर कड़वी महंगाई का साया मंडरा रहा है। आम आदमी की रसोई से लेकर हलवाइयों और बड़े खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों तक, हर जगह एक ही सवाल गूंज रहा है– चीनी के बढ़ते दामों पर कब और कैसे लगाम लगेगी?

पिछले कुछ हफ्तों में देश के विभिन्न हिस्सों में चीनी की खुदरा कीमतों में अप्रत्याशित उछाल देखा गया है। जो चीनी कुछ समय पहले तक 40 से 42 रुपये प्रति किलोग्राम के दायरे में मिल रही थी, वह अब कई खुदरा बाजारों में 52 से 56 रुपये और कुछ प्रीमियम शहरी इलाकों में 65 से 70 रुपये प्रति किलोग्राम तक पहुंच चुकी है। त्योहारों के ठीक पहले कीमतों में यह वृद्धि केवल एक सांख्यिकीय आंकड़ा नहीं है, बल्कि यह देश के करोड़ों मध्यमवर्गीय और निम्न-आय वर्ग के परिवारों के बजटीय संतुलन को बिगाड़ने वाली एक कड़वी हकीकत है।

कृषि, पर्यावरण और बाजार की विसंगतियों के एक जटिल ताने-बाने ने मिलकर चीनी के बाजार को प्रभावित किया है। इस संकट की पहली और सबसे प्रमुख जड़ अल-नीनो के प्रभाव और देश के प्रमुख गन्ना उत्पादक राज्यों में असमान मानसून के कारण गन्ने की फसल का प्रभावित होना है। महाराष्ट्र और कर्नाटक जैसे शीर्ष उत्पादक राज्यों में कम बारिश के चलते गन्ने के उत्पादन में गिरावट दर्ज की गई है। जब भी कृषि आधारित किसी भी उत्पाद का उत्पादन घटने की आशंका होती है, तो बाजार में एक मनोवैज्ञानिक कमी पैदा हो जाती है, जिसका सीधा असर कीमतों पर पड़ता है। दूसरा महत्वपूर्ण कारण गन्ने का एथेनॉल उत्पादन की ओर डाइवर्ट होना भी रहा है। सरकार की हरित ऊर्जा नीति के तहत पेट्रोल में एथेनॉल ब्लेंडिंग के लक्ष्य को हासिल करने के लिए भारी मात्रा में गन्ने के रस और शीरे का उपयोग किया जा रहा है। हालांकि, यह कदम देश के कच्चे तेल के आयात बिल को कम करने और पर्यावरण संरक्षण के लिए दीर्घकालिक रूप से बेहद जरूरी है, लेकिन अल्पकालिक रूप से इसने खाद्य चीनी की उपलब्धता पर दबाव बनाया है। जब मिलें चीनी बनाने के बजाय एथेनॉल बनाने को प्राथमिकता देने लगती हैं, तो बाजार में चीनी की तात्कालिक आपूर्ति प्रभावित होना स्वाभाविक है।

जैसे ही बाजार को यह संकेत मिलता है कि आगामी सीजन में उत्पादन कम रह सकता है, वैसे ही बाजार के कुछ अवांछित तत्व सक्रिय हो जाते हैं। थोक व्यापारी, बड़े डीलर और कुछ खाद्य प्रसंस्करण इकाइयां भविष्य में और अधिक दाम बढ़ने की उम्मीद में चीनी का स्टॉक जमा करना शुरू कर देते हैं। इस कृत्रिम कमी के कारण थोक बाजारों में दाम रातों-रात बढ़ जाते हैं, जिसका खामियाजा अंततः खुदरा उपभोक्ता को भुगतना

हिन्दी दैनिक
उत्तरशक्ति
मार्गदर्शन

पड़ता है। त्योहारों के समय मिठाई निमार्ताओं, बेकरियों और शीतल पेय कंपनियों की तरफ से चीनी की मांग सामान्य दिनों की तुलना में 30 से 40 प्रतिशत तक बढ़ जाती है। मांग में इस मौसमी वृद्धि और आपूर्ति में सट्टेबाजी के गठजोड़ ने ही इस बार कीमतों को बेकाबू कर दिया है। कीमतों के इस बेकाबू रथ को रोकने के लिए सरकार ने हाल ही में कुछ अत्यंत सख्त और नीतिगत कदम उठाए हैं, जिन्हें इस संकट के समाधान की दिशा में एक बड़ा 'डैमेज कंट्रोल' माना जा सकता है। उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय और खाद्य मंत्रालय ने स्थिति की गंभीरता को देखते हुए कई मोर्चों पर एक साथ कार्रवाई शुरू की है। सबसे पहला और कड़ा प्रहार जमाखोरों पर किया गया है। सरकार ने चीनी के लिए नई 'स्टॉक लिमिट' लागू कर दी है। इसके तहत, जो भी बड़े खाद्य निमार्ता या बल्क कंज्यूमर्स महीने में 10 टन से अधिक चीनी का उपयोग करते हैं, वे अब 1 सितंबर से 30 नवंबर तक अपनी 15 दिनों की खपत से अधिक का स्टॉक नहीं रख सकते। पहले यह सीमा 30 दिनों की थी, जिसे आधा कर दिया गया है ताकि मिलों और गोदामों में बंद चीनी बाजार में आने के लिए मजबूर हो। इसी तरह, डीलर और ट्रेडर के लिए भी अधिकतम 4000 क्विंटल (400 टन) की स्टॉक सीमा तय कर दी गई है। इस कदम का मुख्य उद्देश्य बाजार में चीनी के कृत्रिम अभाव को पूरी तरह समाप्त करना है। दूसरा बड़ा कदम 'शुल्क-मुक्त आयात' की अनुमति देना है। घरेलू उपलब्धता को तुरंत सुदृढ़ करने के लिए सरकार ने 10 लाख टन कच्ची चीनी के आयात को मंजूरी दी है। अंतरराष्ट्रीय बाजार से आने वाली यह चीनी देश की मिलों के पास जाकर रिफाइन होगी और सीधे बाजार में सप्लाई की जाएगी। इसके अतिरिक्त, राज्यों और मिलों को इस बार गन्ने की पेराई का नया सीजन 15 अक्टूबर से ही शुरू करने के निर्देश दिए गए हैं, जो आमतौर पर नवंबर में शुरू होता है। पेराई सत्र को समय से पहले शुरू करने का सीधा लाभ यह होगा कि दशहरा और दिवाली के मुख्य त्योहारी दिनों के बीच बाजार में बिल्कुल ताजी और पर्याप्त चीनी उपलब्ध होगी। अब सवाल यह उठता है कि इन प्रशासनिक और नीतिगत उपायों का असर धरातल पर कब तक दिखेगा? बाजार विश्लेषकों और आर्थिक विशेषज्ञों का मानना है कि सरकार के इन कदमों का असर सितंबर के पहले या दूसरे सप्ताह से खुदरा बाजार में दिखना शुरू हो जाना चाहिए। जब थोक खरीदारों और डीलर्स पर स्टॉक खाली करने का दबाव बढ़ेगा, तो वे बाजार में चीनी की आपूर्ति बढ़ाएंगे, जिससे थोक कीमतों में तत्काल नरमी आएगी। इसके अलावा, एथेनॉल उत्पादन के लिए गन्ने के उपयोग पर लगाए गए अस्थायी नियंत्रणों से भी चीनी मिलों को अधिक चीनी बनाने में मदद मिलेगी। हालांकि, उपभोक्ताओं को यह समझना होगा कि वैश्विक स्तर पर भी चीनी की कीमतें ऊंचे स्तर पर हैं, इसलिए दाम रातों-रात बहुत नीचे नहीं गिरेंगे। लेकिन हां, जो चीनी इस समय 65से 7 0 रुपये तक बिक रही है, उसके वापस 44 से 46 रुपये प्रति किलो के एक स्थिर और न्यायसंगत दायरे में आने की पूरी संभावना है। त्योहारों पर हर साल चीनी, खाद्य तेल या अन्य आवश्यक वस्तुओं के दामों का बढ़ना एक स्थायी समस्या बनती जा रही है। हर बार सरकार तात्कालिक उपाय जैसे स्टॉक लिमिट लगाना या आयात करना अपनाती है, लेकिन इस समस्या के स्थायी समाधान के लिए एक दीर्घकालिक और संतुलित रणनीति की आवश्यकता है। सरकार को खाद्य सुरक्षा और ऊर्जा सुरक्षा के बीच एक महीन संतुलन बनाना होगा। गन्ने से एथेनॉल बनाने के लक्ष्यों को तय करते समय देश की घरेलू चीनी खपत के सुरक्षित बफर स्टॉक को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। साथ ही, गन्ना एक अत्यधिक पानी की खपत वाली फसल है। जलवायु परिवर्तन के इस दौर में किसानों को ड्रिप इरिगेशन और कम पानी में अधिक उपज देने वाली गन्ने की नई किस्मों की ओर स्थानांतरित करना होगा ताकि मानसून की अनिश्चितता का असर उत्पादन पर न पड़े। इसके अतिरिक्त, देश में चीनी के उत्पादन, मिलों के स्टॉक और बड़े डीलरों के गोदामों की रियल-टाइम डिजिटल ट्रैकिंग होनी चाहिए ताकि त्योहारों के आने का इंतजार किए बिना, सट्टेबाजी के शुरूआती संकेतों पर ही कार्रवाई की जा सके। त्योहार किसी भी समाज के सांस्कृतिक गौरव और सामूहिक खुशी के अवसर होते हैं। किसी भी लोकतांत्रिक और कल्याणकारी सरकार की यह प्राथमिक जिम्मेदारी है कि वह इन अवसरों पर आम नागरिक की थाली और त्योहार की मिठास को सुरक्षित रखे। सरकार द्वारा उठाए गए हालिया कदम जैसे स्टॉक लिमिट को आधा करना और शुल्क-मुक्त आयात की अनुमति देना सही दिशा में उठाए गए मजबूत कदम हैं। उम्मीद की जानी चाहिए कि सितंबर की शुरूआत के साथ ही इन कदमों का असर खुदरा दुकानों पर दिखेगा और इस बार त्योहारों की मिठास महंगाई के कड़वेपन से मुक्त रहेगी। बाजार पर निरंतर निगरानी और नियमों का सख्त प्रवर्तन ही इस लगाम को प्रभावी बनाए रख सकता है।

स्कूल में संकट, डिग्री में दम नहीं, रोजगार में रास्ता नहीं

स्कूल की टूटी छत से शुरू हुई कहानी डिग्री लेकर बेरोजगार खड़े युवा तक पहुंचती है। यही भारत की शिक्षा व्यवस्था का सबसे कड़वा सच है। आज बच्चे पंखा, पानी, शिक्षक, सड़क और शौचालय के लिए सड़क पर हैं। कल यही बच्चे डिग्री लेकर नौकरी की कतार में होंगे। फर्क सिर्फ इतना होगा कि आज वे व्यवस्था से पढ़ने लायक स्कूल मांग रहे हैं, कल जीने लायक रोजगार मांगेंगे। सवाल यह है कि सरकार उस बच्चे की आवाज कब सुनेगी जब वह स्कूल के बाहर नारा लगा रहा है या तब, जब लाखों युवाओं की भीड़ में सरकारी नौकरी का फॉर्म भर रहा होगा?जुलाई और अगस्त 2026 में देश के अलग-अलग राज्यों से बच्चों के विरोध की जो तस्वीरें सामने आईं, वे मामूली नहीं हैं। फतेहपुर में सैकड़ों छात्रों ने बिजली, पंखे, पीने के पानी और खराब व्यवस्थाओं के खिलाफ आवाज उठाई। हमीरपुर में करीब 300 बच्चे स्कूल तक पक्की सड़क की मांग को लेकर छह किलोमीटर पैदल चले। लखनऊ में छात्राओं ने शिक्षकों की कमी और बुनियादी सुविधाओं का सवाल उठाया। गया के सिमुआरा मिडिल स्कूल के करीब 50 बच्चे चार किलोमीटर पैदल चलकर अधिकारियों तक पहुंचे। राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा और पंजाब तक एक जैसी शिकायतें सुनाई दीं। कोई नई इमारत नहीं मांग रहा था। कोई महंगी मशीन नहीं मांग रहा था। बच्चे बस इतना कह रहे थे स्कूल को स्कूल बना दो।

यहां सरकारी आंकड़े सरकार के लिए ढाल कम और आईना ज्यादा हैं। यूडायस प्लस 2025-26 के अनुसार देश में 1,00,843 स्कूल ऐसे हैं, जहां केवल एक शिक्षक है। इन स्कूलों में 29 लाख से अधिक बच्चे पढ़ रहे हैं। एक शिक्षक को कई कक्षाओं को पढ़ाना है, उपस्थिति देखनी है, सरकारी कागज भरने हैं और पूरे स्कूल की जिम्मेदारी भी उठानी है। दूसरी तरफ 5,663 स्कूल ऐसे हैं, जहां एक भी बच्चा नामांकित नहीं है, लेकिन वहां 20,667 शिक्षक तैनात हैं। इससे साफ है कि समस्या केवल शिक्षकों की कमी नहीं है। असली बीमारी व्यवस्था की नब्ज में है। जहां जरूरत है, वहां शिक्षक नहीं। जहां बच्चे नहीं, वहां शिक्षक मौजूद हैं। यह कमी नहीं, बंटवारे की विफलता है।सरकार कह सकती है कि तस्वीर सुधर रही है। बिजली वाले स्कूलों का अनुपात बढ़कर 95 प्रतिशत हो गया है। पीने के पानी की सुविधा 99.5 प्रतिशत स्कूलों तक पहुंच गई है। लड़कियों के लिए शौचालय 98.5 प्रतिशत और लड़कों के लिए 97.2 प्रतिशत स्कूलों में हैं। ये आंकड़े निश्चित रूप से प्रगति बताते हैं। लेकिन प्रतिशत का खेल उस बच्चे की परेशानी नहीं मिटाता, जिसके स्कूल में बिजली होने के बावजूद पंखा नहीं चलता। राष्ट्रीय औसत की सबसे बड़ी चाल यही है कि वह लाखों बच्चों की परेशानी को एक छोटे प्रतिशत में बदल देता है। पांच प्रतिशत स्कूलों में बिजली नहीं है, यह आंकड़ा सुनने में छोटा लगता है। लेकिन 14 लाख से अधिक

-संजय सक्सेना

स्कूलों वाले देश में पांच प्रतिशत हजारों स्कूल होते हैं। वहां पढ़ने वाला बच्चा प्रतिशत नहीं जानता। वह बस गर्मी में बैठता है। जिस स्कूल में पानी गंदा है, वहां 99.5 प्रतिशत की उपलब्धि का कोई मतलब नहीं। जिस शौचालय में ताला लगा है या सफाई नहीं, वहां कागज पर बनी सुविधा बच्चे की जरूरत पूरी नहीं करती। शिक्षा का असली हिसाब यह नहीं कि कितने स्कूलों में सुविधा दर्ज है। असली सवाल यह है कि सुबह स्कूल पहुंचने पर बच्चा उसे इस्तेमाल कर सकता है या नहीं।डिजिटल शिक्षा की तस्वीर भी कम चिंताजनक नहीं। देश के केवल 67.4 प्रतिशत स्कूलों में इंटरनेट है और 69.9 प्रतिशत में कंप्यूटर की सुविधा दर्ज है। डिजिटल पुस्तकालय केवल 7.1 प्रतिशत स्कूलों तक सीमित है। ऐसे समय में जब दुनिया तेजी से कृत्रिम बुद्धिमत्ता और नई तकनीक की तरफ बढ़ रही है, देश का बड़ा हिस्सा अभी इंटरनेट की दहलीज पर खड़ा है। एक बच्चा घर में कंप्यूटर, तेज इंटरनेट और अलग से प्रशिक्षण के साथ पढ़ रहा है। दूसरा बच्चा स्कूल में बिजली और पंखे की मांग कर रहा है। फिर दोनों से एक जैसी दौड़ में उतरने की उम्मीद की जाती है। इसे समान अवसर कहना सच्चाई से आंख चुराना है।

दिव्यांग बच्चों की स्थिति और ज्यादा सवाल खड़े करती है। करीब 79.7 प्रतिशत स्कूलों में रैंप हैं, लेकिन दिव्यांग बच्चों के अनुकूल शौचालय केवल 40.1 प्रतिशत स्कूलों में हैं। जयपुर में दिव्यांग छात्रों का विरोध इसी अधूरी व्यवस्था की तरफ इशारा करता है। सरकार रैंप बनाकर सुविधा पूरी मान लेती है, लेकिन बच्चा स्कूल के भीतर अपनी बाकी जरूरतें कैसे पूरी करेगा, यह सवाल पीछे छूट जाता है। पहुंच केवल दरवाजे तक पहुंचने का नाम नहीं है। सम्मान के साथ पूरी शिक्षा पाने का नाम है।यहीं से कहानी स्कूल की दीवार पार करती है और कॉलेज तक पहुंचती है। कमजोर बुनियाद वाला बच्चा किसी तरह बारहवीं पास करता है। फिर बीए, बीकॉम या बीएससी में दाखिला लेता है। डिग्री मिलती है और उसके बाद सामने खड़ा होता है नौकरी का बाजार। नीति आयोग की 18 अगस्त 2026 की रिपोर्ट ने इस अगले संकट की परत खोल दी। रिपोर्ट के अनुसार केवल 8.25 प्रतिशत स्नातक अपनी योग्यता के अनुरूप रोजगार पा सके। देश में करीब 3 करोड़ 40 लाख छात्र स्नातक पाठ्यक्रमों में हैं। इनमें बड़ी संख्या सामान्य डिग्रियों में पढ़ रही है। डिग्री बढ़ रही है, लेकिन उसके साथ काम करने की क्षमता उसी गति से नहीं बढ़ रही।

रिपोर्ट का सबसे परेशान करने वाला निष्कर्ष यह है कि पढ़ाई और रोजगार की जरूरतों के बीच बड़ी खाई है। करीब 34 प्रतिशत छात्र कौशल की कमी को गंभीर समस्या मानते हैं। 18 प्रतिशत छात्र साक्षात्कार की तैयारी को लेकर परेशान हैं। लगभग 80 प्रतिशत छात्रों ने व्यावहारिक और कामकाजी अनुभव की कमी को बड़ी कमजोरी बताया। एक छात्र अर्थशास्त्र पढ़ता है, लेकिन उसे कंपनी में उसका इस्तेमाल नहीं आता। वाणिज्य का छात्र हिसाब-किताब जानता है, लेकिन कामकाजी सॉफ्टवेयर का अनुभव नहीं। राजनीति विज्ञान का छात्र सिद्धांत जानता है, लेकिन शोध और नीतियों के व्यावहारिक विश्लेषण की तैयारी कमजोर है।यही वजह है कि डिग्री लेकर निकलने वाला युवा अक्सर सरकारी नौकरी की तरफ दौड़ता है। नवंबर 2024 से जुलाई 2025 के बीच 55 हजार सरकारी पदों के लिए 1 करोड़ 86 लाख आवेदन आए। यह सिर्फ बेरोजगारी का आंकड़ा नहीं है। यह उस शिक्षा व्यवस्था पर फैसला है, जो युवाओं को वैकल्पिक रास्तों के लिए पर्याप्त रूप से तैयार नहीं कर पाई। डिग्री पात्रता देती है, लेकिन क्षमता नहीं। फिर युवा सालों तक एक परीक्षा के पीछे भागता है, क्योंकि उसके पास दूसरा भरोसेमंद रास्ता नहीं होता।

इस पूरी बहस का सबसे असहज सवाल सरकारी स्कूलों पर भरोसे का है। सरकारी शिक्षक का बच्चा निजी स्कूल में पढ़े, अधिकारी का बच्चा निजी स्कूल में पढ़े और मंत्री का बच्चा भी निजी स्कूल चुने, तो सरकारी स्कूल की बदहाली पर वास्तविक दबाव कौन बनाएगा? निजी स्कूल में पढ़ाना अपराध नहीं और किसी अभिभावक के चुनाव पर रोक नहीं होनी चाहिए। लेकिन जो लोग सरकारी शिक्षा की व्यवस्था चलाते हैं, अगर उनका अपना भरोसा ही उससे उठ जाए, तो सुधार की आग किसके भीतर जलेगी?गरीब बच्चे के पास यह विकल्प नहीं होता। उसके स्कूल में शिक्षक नहीं है तो वह महंगी पढ़ाई का सहारा नहीं ले सकता। कंप्यूटर नहीं है तो घर में दूसरा नहीं मिलता। अंग्रेजी या तकनीकी कौशल कमजोर है तो अतिरिक्त प्रशिक्षण उसकी पहुंच से बाहर है। दूसरी तरफ संसाधनों वाले परिवारों के बच्चे बेहतर स्कूल, अतिरिक्त प्रशिक्षण और अनुभव के साथ आगे निकल जाते हैं। फिर दोनों एक ही परीक्षा में बैठते हैं और व्यवस्था इसे बराबरी की दौड़ कहती है।भारत को अब स्कूलों की संख्या नहीं, शिक्षा की गुणवत्ता पर बहस करनी होगी। हर स्कूल में शिक्षक हो, सुविधाएं सिर्फ कागज पर नहीं, रोज चलती हुई मिलें। बच्चों को रटने के साथ काम करने, सोचने, संवाद करने और नई तकनीक समझने की क्षमता मिले। कॉलेज की डिग्री को रोजगार, प्रशिक्षण और वास्तविक अनुभव से जोड़ा जाए।आज बच्चा पंखा मांग रहा है। कल वही युवा नौकरी मांगेगा। अगर स्कूल की पहली आवाज नहीं सुनी गई, तो बेरोजगारी की अगली चीख और तेज होगी। भारत की शिक्षा व्यवस्था के सामने अब सवाल एक ही है बच्चों को सिर्फ डिग्री देनी है या भविष्य भी देना है?

ड्रोन युद्ध और भविष्य के युद्धक्षेत्र के लिए भारत की तैयारी

स्वदेशी रूप से विकसित दिव्यास्त्र एमके3 की पहली उड़ान एक सकारात्मक कदम है, क्योंकि भारतीय सेना युद्ध में यूएएस तकनीक पर तेजी से निर्भर हो रही है। आज के युद्ध में एक मौलिक बदलाव आने वाला है: युद्ध का आकलन अब केवल टैंकों, लड़ाकू विमानों, मिसाइलों और सैनिकों की संख्या से नहीं किया जाता। निगरानी, ??लक्ष्यीकरण, सटीक हमले और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध के लिए यूएएस तेजी से पसंदीदा उपकरण बनते जा रहे हैं। इसलिए, अगस्त 2026 में स्वदेशी दिव्यास्त्र एमके3 जेट की सफलता न केवल एक तकनीकी सफलता है, बल्कि एक अधिक नेटवर्कयुक्त, प्रौद्योगिकी-संचालित और स्वतंत्र युद्धक्षेत्र के अनुकूल होने के भारत के प्रयासों का संकेत भी है।

ड्रोन युद्ध में मानवरहित हवाई प्रणालियों का उपयोग खुफिया जानकारी, निगरानी और टोही (आईएसआर) जुटाने, लक्ष्यों का पता लगाने, सटीक हमले करने, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध और संचार सहायता प्रदान करने के लिए किया जाता है। हाल के युद्धों ने दिखाया है कि ड्रोनों का उपयोग युद्ध लड़ने के तरीके और आर्थिक संचालन में क्रांतिकारी बदलाव ला सकता है। ड्रोनों में सैन्य अभियानों की प्रकृति और अर्थव्यवस्था को बदलने की क्षमता भी है, जैसा कि हाल के युद्धों से स्पष्ट है। रूस-यूक्रेन युद्ध में अपेक्षाकृत सस्ते ड्रोनों से महंगे टैंकों, तोपखाने, युद्धपोतों और अन्य पारंपरिक सैन्य उपकरणों को होने वाले खतरे का प्रदर्शन किया गया है। सैन्य श्रेष्ठता की बात करें तो, यह अब केवल महंगे प्लेटफॉर्म रखने के बारे में नहीं है, बल्कि बड़ी संख्या में सस्ते, लचीले और बुद्धिमान सिस्टम तैनात करने की क्षमता के बारे में है।

ड्रोन के उपयोग के लाभ व्यापक हैं और सबसे महत्वपूर्ण लाभों में से एक यह है कि ये खतरनाक अभियानों में मानव जीवन बचाते हैं। आईएसआर ड्रोन का उपयोग दुश्मन के क्षेत्र की जासूसी करने के लिए किया जा सकता है, जिससे पायलट और सैनिक खतरे से सुरक्षित रहते हैं। ये कमांडरों को दुश्मन के स्थान, सैनिकों की संख्या और युद्धक्षेत्र की स्थिति के बारे में पल-पल की जानकारी प्रदान कर सकते हैं। इससे स्थिति की बेहतर समझ विकसित होती है और अधिक जानकारी के साथ त्वरित निर्णय लेने में मदद मिलती है। भारत जैसे देश के लिए यह एक अत्यंत मूल्यवान रणनीतिक क्षमता है, जहाँ सीमाएँ जटिल हैं, पर्वतीय भूभाग मौजूद है और परिचालन परिस्थितियाँ भिन्न-भिन्न हैं।

लोइटर मुनिशन्स (लाइवेटरी मुनिशन्स) सेंसर-टू-शूटर पद्धति की आवश्यकता को समाप्त करके युद्ध में क्रांतिकारी बदलाव ला रहे हैं। पारंपरिक हथियारों का उपयोग करते समय, लक्ष्य का पता लगाने, उसके बारे में जानकारी भेजने, उपयुक्त हथियार चुनने और हमला शुरू करने में काफी समय लग सकता है। लोइटरी मुनिशन्स लक्ष्य की खोज, पहचान और हमले को बहुत कम समय में अंजाम दे सकते हैं। यह विशेष रूप से उन लक्ष्यों के लिए उपयोगी है जिन पर समय का प्रभाव रहता है और जो दुश्मन की गतिशील टुकड़ियों के लिए भी। इस प्रकार, दिव्यास्त्र एमके3 भारत की स्वदेशी सटीक-स्ट्राइक क्षमता के निर्माण और लक्ष्य का पता लगाने से लेकर हमले तक के समय को कम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण विकास है।

ड्रोन युद्ध की अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित कर रहे हैं। कम लागत वाला

-प्रियंका सौरभ

मानवरहित प्लेटफॉर्म कई गुना अधिक लागत वाली संपत्ति को नुकसान पहुंचा सकता है या नष्ट कर सकता है। यह पारंपरिक सेनाओं के लिए एक गंभीर चुनौती है। रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान व्यावसायिक रूप से उपलब्ध तकनीकों को तेजी से सैन्य उपयोग में लाया गया, जैसा कि फर्स्ट-पर्सन व्यू (एफपीवी) ड्रोन के उपयोग से देखा जा सकता है। लेकिन कैमरे और विस्फोटक ले जाने वाले छोटे ड्रोन सटीक निर्देशित हथियारों की तुलना में बहुत कम लागत पर टैंकों और अन्य बख्तरबंद वाहनों के कमजोर बिंदुओं को निशाना बना सकते हैं। इसलिए, युद्ध के संदर्भ में भविष्य में नागरिक प्रौद्योगिकी को सैन्य आवश्यकताओं के अनुरूप ढालने और नए विचारों को तेजी से विकसित करने की क्षमता और भी महत्वपूर्ण हो जाएगी। दूसरा बड़ा बदलाव ड्रोन झुंडों के रूप में सामने आया है। बड़ी संख्या में समन्वित ड्रोन पारंपरिक वायु रक्षा प्रणालियों को ओवरलोड या ₹अतिभारित₹ कर सकते हैं। पारंपरिक वायु रक्षा मिसाइलें एक विमान या मिसाइल को मार गिराने में बहुत कारगर होती हैं, लेकिन महंगी मिसाइलों से सौ या उससे अधिक सस्ते ड्रोनों को मार गिराना आर्थिक रूप से व्यवहार्य नहीं है। बड़े पैमाने पर ड्रोन हमले होने पर रक्षा करने वालों को लागत के लिहाज से काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। इसका मतलब यह है कि भविष्य का युद्धक्षेत्र ड्रोन बेड़ों और बहुस्तरीय ड्रोन-रोधी (सीडी) क्षमताओं के बीच संघर्ष बन सकता है, जो एक साथ कई खतरों का पता लगाने, उनका पीछा करने और उन्हें निष्क्रिय करने में सक्षम हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (अक) के प्रभाव से इस बदलाव में और भी तेजी आने की उम्मीद है। अक में नेविगेशन, ऑब्जेक्ट रिकग्निशन और टारगेट आइडेंटिफिकेशन को बेहतर बनाने के साथ-साथ कई मानवरहित प्रणालियों के बीच समन्वय स्थापित करने की क्षमता है। यह बढ़ी हुई स्वतंत्रता इलेक्ट्रॉनिक युद्ध के कारण संचार विफलता की स्थिति में ड्रोन को संचालन में मदद कर सकती है। लेकिन अक-संचालित स्वायत्तता के साथ महत्वपूर्ण नैतिक, कानूनी और जवाबदेही संबंधी प्रश्न भी उठते हैं। कभी-कभी किसी स्वायत्त प्रणाली द्वारा गलत लक्ष्य निर्धारण के परिणामों की ज़िम्मेदारी स्पष्ट नहीं होती। इसलिए, सैन्य प्रभावशीलता का मूल्यांकन सार्थक मानवीय नियंत्रण के संदर्भ में किया जाना चाहिए, युद्ध के नियम पारदर्शी होने चाहिए और जवाबदेही के मानक स्पष्ट होने चाहिए। भारत ने ड्रोन युद्धक क्षमता विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाने शुरू कर दिए हैं। दिव्यास्त्र एमके3 स्वदेशी सटीक हमले की क्षमता को बढ़ाता है और घरेलू मानवरहित प्रणालियों पर बढ़ते ध्यान का परिणाम है। स्वदेशी प्रणोदन के लिए यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि आयातित इंजनों और प्रमुख पुर्जों पर निर्भरता संघर्ष के समय रणनीतिक कमजोरियों का कारण बन सकती है। इसलिए, विदेशी प्रौद्योगिकियों पर निर्भरता कम करने और तकनीकी आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए डीजी प्रोपल्शन द्वारा जेट इंजन का विकास महत्वपूर्ण है। भारतीय सेना के पुनर्गठन से यह भी संकेत मिलता है कि सेना भविष्य के युद्धों में ड्रोन की अहमियत को समझने लगी है। अश्विनी ड्रोन प्लाटून और दिव्यास्त्र बैटरी मानवरहित प्रणालियों को युद्ध संरचनाओं के साथ बेहतर ढंग से एकीकृत करने के उद्देश्य से उठाए गए कदम हैं। डीआरडीओ के यूएलपीजीएम-वी3 जैसे सटीक निर्देशित स्वदेशी हथियार यूएवी प्लेटफार्मों की युद्ध क्षमताओं को और बढ़ा सकते हैं। इसी बीच, देश में एकतरफा हमला करने वाले ड्रोनों का निर्माण मानवरहित क्षमताओं के विस्तार में योगदान दे रहा है। अब तक हुई प्रगति से संकेत मिलता है कि भारत युद्धक्षेत्र में ड्रोनों के नियोजित उपयोग की दिशा में कदम बढ़ा रहा है। हालांकि, भारत में तैयारियों का स्तर अभी पूर्ण नहीं है। ड्रोन के उपयोग के सबसे बड़े खतरों में से एक इलेक्ट्रॉनिक युद्ध है। जैमिंग और स्पूफिंग के जरिए नेविगेशन और संचार लिंक को बाधित किया जा सकता है। ड्रोन के नेविगेशन सिस्टम या कमांड लिंक के विफल होने की स्थिति में, यह सबसे महत्वपूर्ण समय पर अप्रभावी हो सकता है। भविष्य के भारतीय सिस्टमों में सुरक्षित संचार, एंटी-जैमिंग सिस्टम, अन्य नेविगेशन सिस्टम और स्वायत्तता का उच्च स्तर होना आवश्यक है। एक और महत्वपूर्ण आवश्यकता ड्रोन रोधी क्षमता है। इसका मतलब यह नहीं है कि आप किसी महंगे मिसाइल से सस्ते ड्रोन को मार गिराने का तरीका नहीं खोज सकते, लेकिन हर बार ऐसा संभव नहीं है। भारत में किफायती और बहुस्तरीय समाधानों की आवश्यकता है जिनमें ड्रोन रोधी निर्देशित ऊर्जा हथियार, उभरती प्रौद्योगिकियां, इलेक्ट्रॉनिक जैमिंग, पहचान नेटवर्क, गतिज अवरोधन और अन्य समाधान शामिल हों। स्वदेशी सेंसर, इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर और सुरक्षित प्रोसेसर विकसित करना उतना ही महत्वपूर्ण है। विदेशी प्रमुख प्रौद्योगिकियों पर निर्भरता लंबी लड़ाई की स्थिति में गंभीर समस्या पैदा कर सकती है। ड्रोन अपनी अनुकूलनीय, स्वायत्त और किफायती हथियारों से सटीक युद्ध में क्रांति ला रहे हैं। ये शत्रुता और रक्षात्मक रणनीतियों के स्वरूप को बदल रहे हैं और सैन्य शक्ति के पारंपरिक अर्थशास्त्र को भी परिवर्तित कर रहे हैं। दिव्यास्त्र एमके3 इन बदलते समय के अनुरूप ढलने के भारत के प्रयासों का एक महत्वपूर्ण प्रतीक है। लेकिन केवल अधिक ड्रोन होना ही तैयारी के लिए पर्याप्त नहीं है। भारत को स्वदेशी नवाचारों को सैन्य सिद्धांत, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सुरक्षित संचार और प्रभावी ड्रोन-रोधी तकनीकों में एकीकृत करना होगा। जो राष्ट्र इन सभी को एकीकृत कर सकेगा, वही आने वाले युद्धों में विजयी होने की प्रबल संभावना रखता है।

चोरी के इरादे से ट्रक चालक की हत्या करने वाले दो आरोपी गिरफ्तार

भिवंडी (उत्तरशक्ति)। भिवंडी-ठाणे बाईपास मार्ग पर चोरी के इरादे से ट्रक चालक की हत्या करने वाले दो आरोपियों को कोनगांव पुलिस ने गिरफ्तार कर हत्याकांड का पदार्फाश किया है। पुलिस ने करीब 150 सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालने और तकनीकी विश्लेषण के आधार पर आरोपियों तक पहुंचने में सफलता हासिल की। मृतक की पहचान बिहार निवासी पवनकुमार काजू महतो (33) के रूप में हुई है। गिरफ्तार आरोपियों में भिवंडी निवासी रमीज अब्दुल रशीद अंसारी (23) और मोहम्मद अलकैश परवेज आलम मोमिन (25) शामिल हैं। पुलिस के अनुसार, 16 अगस्त की रात करीब 2:45 बजे पवनकुमार महतो टाटा आमंत्रा के पास अपना ट्रेलर खड़ा कर भोजन कर रहे थे। इसी दौरान दोनों आरोपियों ने पैसे लूटने के उद्देश्य से उन्हें धमकाया। चालक ने विरोध किया तो आरोपियों ने चाकू से हमला कर उनकी हत्या कर दी और उनके पास से पैसे लेकर दोपहिया वाहन से फरार हो गए। घटना के बाद कोनगांव पुलिस थाने में अज्ञात आरोपियों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज किया गया। पुलिस उपायुक्त डॉ. पवन बनसोड और सहायक पुलिस आयुक्त सचिन सांगले के मार्गदर्शन में वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक मंगेश बोरसे के नेतृत्व में पांच टीमें गठित की गईं।

जांच के दौरान पुलिस टीम ने घटनास्थल और भिवंडी शहर के विभिन्न इलाकों में लगे करीब 150 सीसीटीवी कैमरों की तीन दिनों तक बारीकी से जांच की। प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा बताए गए हुलिए के आधार पर संदिग्धों की पहचान की गई। इसके बाद तकनीकी जांच के जरिए पुलिस ने दोनों आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ की, जिसमें उन्होंने अपराध कबूल कर लिया।पुलिस के मुताबिक, आरोपी अलकैश मोमिन के खिलाफ चोरी और स्नैचिंग सहित 18 मामले विभिन्न पुलिस थानों में दर्ज हैं, जबकि रमीज के खिलाफ भी एक मामला दर्ज है। पुलिस उपायुक्त डॉ. पवन बनसोड ने पत्रकार परिषद में कार्रवाई की जानकारी देते हुए बताया कि बिना किसी ठोस सुराग के पुलिस टीम ने तकनीकी जांच और सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपियों तक पहुंचने में सफलता हासिल की।

केवट सामाजिक सेवा फाउंडेशन ने विद्यार्थियों को वितरित कीं कलम-कॉपियां

मुंबई (उत्तरशक्ति)। केवट सामाजिक सेवा फाउंडेशन की ओर से विद्यार्थियों के प्रोत्साहन एवं शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष तुलसी राम केवट के निर्देश पर आयोजित इस पहल के तहत विभिन्न ग्राम सभाओं के स्कूलों में अध्ययनरत बच्चों को कलम और कॉपियां वितरित कर सम्मानित किया गया। फाउंडेशन के पदाधिकारियों ने बच्चों को शिक्षा के महत्व के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। कलम-कॉपी जैसी शैक्षणिक सामग्री मिलने से बच्चों में पढ़ाई के प्रति उत्साह और आत्मविश्वास बढ़ता है। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि शिक्षा ऐसा महान धन है, जिसका न तो बंटवारा होता है और न ही उसे कोई चुरा सकता है। धन-दौलत का बंटवारा हो सकता है, लेकिन शिक्षा जितनी बांटी जाती है, उतनी ही बढ़ती है। बच्चों को मन लगाकर पढ़ाई करने और अपने भविष्य को बेहतर बनाने के लिए प्रेरित किया गया।कार्यक्रम में केवट सामाजिक सेवा फाउंडेशन के वरिष्ठ पदाधिकारियों में प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र कुमार बिंद, प्रदेश उपाध्यक्ष हरीश चंद बिंद, प्रदेश मीडिया प्रभारी एवं अध्यापक राहुल कुमार बिंद, जिला जौनपुर उपाध्यक्ष शिवराज बिंद, डॉ. अनुराग बिंद, प्रबंधक राधेश्याम, ग्राम सभा सराय चंदन, जमालपुर, कटाहित खास तथा ग्राम सभा भटहर के प्रबंधक दिनेश कुमार बिंद और डॉ. महेश प्रताप बिंद सहित अन्य पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे।

वॉक फॉर वॉटर से जल-मृदा संरक्षण का संदेश

पालघर(उत्तरशक्ति)। पानी की हर बूंद बचायें, सूखामुक्त महाराष्ट्र बनायें का संकल्प लेते हुए पालघर शहर में जलसंवर्धन दिवस के अवसर पर आयोजित वॉक फॉर वॉटर महावॉकेथॉन में हजारों पालघरवासियों ने हिस्सा लिया। विद्यार्थियों, नागरिकों, अधिकारी-कर्मचारियों तथा विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने बड़ी संख्या में शामिल होकर जल एवं मृदा संरक्षण का संदेश दिया। पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय सुधाकरराव नाईक की जयंती के अवसर पर आयोजित इस 3 किलोमीटर लंबी महावॉकेथॉन का उद्देश्य वर्षा जल की प्रत्येक बूंद को रोकने, उसे जमीन में उतारने तथा जलस्त्रोतों के संरक्षण के प्रति जनजागरूकता पैदा करना था। इस दौरान जलसुरक्षित और सूखामुक्त महाराष्ट्र के निर्माण में जनभागीदारी की आवश्यकता पर जोर दिया गया। महावॉकेथॉन का शुभारंभ पांचबत्ती स्थित हुतात्मा स्तंभ से किया गया। प्रतिभागी माहीम रोड होते हुए स्वामी समर्थ मठ तक पहुंचे और वहां से पुनः माहीम रोड के रास्ते पांचबत्ती स्थित हुतात्मा स्तंभ पर पहुंचकर वॉकेथॉन का समापन किया। हाथों में जलसंवर्धन का संदेश देने वाले फलक लेकर तथा विभिन्न घोषणाओं के माध्यम से प्रतिभागियों ने नागरिकों को जल संरक्षण के प्रति जागरूक किया।महावॉकेथॉन के माध्यम से पालघरवासियों ने जलसंधारण प्रत्येक नागरिक की सामूहिक जिम्मेदारी है का संदेश दिया। पानी की बचत, मिट्टी का संरक्षण और आने वाली पीढ़ियों के लिए जलसुरक्षित महाराष्ट्र के निर्माण का संकल्प इस आयोजन के माध्यम से व्यक्त किया गया। इस अवसर पर जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी मनोज रानडे, निवासी उपजिलाधिकारी सुभाष भागडे, मृदा एवं जलसंधारण विभाग के कार्यकारी अभियंता फरीद खान, उपजिलाधिकारी विजया जाधव, उपविभागीय अधिकारी (मृदा व जलसंधारण) संजय कचरे, ओमकार खोरगडे, सार्वजनिक निर्माण विभाग के कार्यकारी अभियंता महेंद्र कीनी, एम.जी.पी. के कार्यकारी अभियंता श्री मुले, जलसंधारण अधिकारी रवींद्र कोती सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी-कर्मचारी, विद्यार्थी और नागरिक उपस्थित रहे।

बहुजन एकता संगठन की पालघर जिला एवं तहसील कार्यकारिणी घोषित

पालघर(उत्तरशक्ति)। बहुजन एकता संगठन की राष्ट्रीय एवं राज्यस्तरीय कार्यकारिणी के गठन के बाद महाराष्ट्र के पालघर जिले में जिला एवं तहसील स्तर की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। नवनिर्वाचित पदाधिकारियों के चयन एवं सत्कार समारोह का आयोजन 20 अगस्त 2026 को डहाणू तहसील के वधना में किया गया।

कार्यक्रम के दौरान नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का उत्साहपूर्वक सत्कार किया गया। साथ ही संगठन की आगामी कार्ययोजना, सामाजिक सरोकारों और जिले से जुड़े विभिन्न विषयों पर वरिष्ठ पदाधिकारियों ने मार्गदर्शन किया। जिला कार्यकारिणी में अनिल हाडल को पालघर जिला अध्यक्ष, हाफिज शेख को जिला अल्पसंख्यक अध्यक्ष तथा वैशाली तिलवडे को जिला महिला अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी गई। रामदास ढाक को जिला उपाध्यक्ष और संतोष गुहे को जिला सचिव चुना गया। इसी प्रकार जिला सदस्य के रूप में धाक्या शेदड, विलास करबट एवं भरत कामडी का चयन किया गया, जबकि अल्पसंख्यक सदस्य के रूप में खलील पटेल तथा कफिल खान को जिम्मेदारी दी गई। वहीं तहसील स्तर पर डहाणू तहसील अध्यक्ष दिपक कामडी तथा उपाध्यक्ष नवसू चव्हाण चुने गये। जव्हार तहसील अध्यक्ष विजय भोये एवं उपाध्यक्ष दिलीप रावते बनाये गये। वहीं वाडा तहसील अध्यक्ष नितीन बातरा तथा उपाध्यक्ष सुरेश सुतार की नियुक्ति की गई। उत्तर भारतीय पालघर तहसील अध्यक्ष के रूप में पराग यादव को जिम्मेदारी सौंपी गई।

समारोह में संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष साईनाथ रावते ने पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को संगठन की नीतियों, उद्देश्यों और आगामी कार्ययोजना को लेकर मार्गदर्शन दिया। उन्होंने संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत बनाने, कार्यकर्ताओं की सक्रिय भागीदारी बढ़ाने तथा समाज से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर संगठित होकर कार्य करने पर जोर दिया। इस अवसर पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष लहू खरपडे, राष्ट्रीय सचिव नरेश पाटील, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष रघुनाथ वरठा, राष्ट्रीय सदस्य दिलीप डवला, सुभाष बातरा, सचिन खरपडे तथा बिहार राज्य से देव कुमार ने भी पालघर जिले से संबंधित विभिन्न विषयों पर अपने विचार रखे। महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष कपिल सूर्यवंशी ने संगठन की भूमिका और आगामी गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए नवनिर्वाचित पदाधिकारियों से अपनी जिम्मेदारियों का प्रभावी ढंग से निर्वहन करने तथा पालघर जिले में संगठनात्मक गतिविधियों को और मजबूत बनाने का आहवान किया।

कार्यक्रम का सूत्र संचालन अनिल हाडल एवं कपिल सूर्यवंशी ने किया। समारोह को सफल बनाने में डहाणू तहसील कार्यकारिणी सहित बहुजन एकता संगठन के कार्यकताओं ने महत्वपूर्ण सहयोग दिया। बड़ी संख्या में मौजूद कार्यकताओं के बीच नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का स्वागत एवं सत्कार किया गया। अंत में राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन हुआ।

पूर्व केंद्रीय मंत्री गुरुदास कामत की 8वी पुण्यतिथि मनाई गई

मुंबई (उत्तरशक्ति)। पूर्व केंद्रीय मंत्री और मुंबई कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय गुरुदास कामत की 8 वी पुण्यतिथि अंधेरी पश्चिम के डी. एन. नगर कांग्रेस कार्यालय में शनिवार की सुबह मनाई गई। पुण्यतिथि के इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से राज्यसभा सांसद चंद्रकांत हंडोरे, महाराष्ट्र प्रदेश के कांग्रेस नेता राजन भोसले,पूर्व उपमहापौर राजेश शर्मा, पूर्व विधायक अशोक जाधव, पूर्व नगरसेवक धर्मेश व्यास, किशन मिस्त्री, शिवजी सिंह,ईशान्य मुंबई जिला कांग्रेस महासचिव दीपक जोशी, राघवन सारथी, उत्तर पश्चिम जिला कांग्रेस की अध्यक्षा भावना जैन, वजीर चांद मुल्ला सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस के पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित थे।

अशोकनगर भूस्खलन हादसे में मृतकों के परिवारों को सरकार से 4-4 लाख रुपये की सहायता

◆विधायक दिलीप लांडे के प्रयासों को सफलता; मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री सहायता निधि से अतिरिक्त मदद के लिए भी प्रयास

मुंबई (उत्तरशक्ति)। घाटकोपर और चांदिवली के बीच स्थित अशोकनगर क्षेत्र में 12 अगस्त की सुबह भूस्खलन की दर्दनाक घटना में आठ लोगों की मौत हो गई थी। इस हादसे में मृतकों के परिवारों को चांदिवली के विधायक दिलीप (मामा) लांडे के प्रयासों से शुक्रवार को सरकार की ओर से प्रत्येक परिवार को 4 लाख रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की गई।

इस हादसे में मोहम्मद समीर कमल हसन अंसारी, शाहील हुसैन अब्दुल कादर, मोहम्मद आरिफ मोहम्मद अलीम शेख, मरजिना आरिफ शेख, मन्नत आरिफ शेख, आबान आरिफ शेख, विकित रमेश यादव और सद्दाम हुसैन खान वाजिद अली की मौत हुई थी।

सरकार की ओर से दी जाने वाली सहायता राशि से संबंधित पत्र मृतकों के परिजनों को सौंपे गए। इस अवसर पर विधायक दिलीप लांडे, स्थानीय नगरसेवक विजेंद्र शिंदे, उपविभाग प्रमुख राजेंद्र पाटील, सक्रिय शिवसैनिक प्रदीप बंड तथा कुर्ला तालुका तहसीलदार सुमेध कांबले, तलाठी, मंडल अधिकारी निलेश पाटेकर, राजस्व सहायक विनायक किस्ते सहित अधिकारी और पदाधिकारी उपस्थित थे। विधायक दिलीप लांडे ने बताया कि मृतकों के परिवारों को मुख्यमंत्री सहायता निधि और प्रधानमंत्री सहायता निधि से भी आर्थिक मदद दिलाने के लिए सरकार के साथ पत्राचार किया गया है। उन्होंने कहा कि मुंबई में ऐसे संवेदनशील और खतरनाक पहाड़ी इलाकों में रहने वाले नागरिकों की सुरक्षा के लिए स्थायी उपाय किए जाने की आवश्यकता है। इस संबंध में अगले सप्ताह उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित करने की योजना बनाई गई है। अशोकनगर जैसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए खतरनाक पहाड़ी क्षेत्रों का सर्वेक्षण, सुरक्षा उपायों की प्रभावी व्यवस्था तथा आवश्यकता पड़ने पर पुनर्वास के संबंध में ठोस निर्णय लेने की मांग विधायक दिलीप लांडे ने की है।

गणेशोत्सव से पहले विसर्जन घाट पर तैयारियों का आयुक्त ने लिया जायजा

भिवंडी (उत्तरशक्ति)। आगामी गणेशोत्सव के मद्देनजर भिवंडी मनपा आयुक्त अनमोल सागर ने कामतघर स्थित व?ाला देवी तालाब के विसर्जन घाट का निरीक्षण कर तैयारियों और गाद निकालने के कार्य का जायजा लिया। इस दौरान पानी आपूर्ति विभाग के कार्यकारी अभियंता संदीप पटणावर और उपअभियंता उद्धव गावडे उपस्थित रहे। आयुक्त ने तालाब परिसर का निरीक्षण करते हुए पानी की स्थिति, स्वच्छता, सुरक्षा व्यवस्था तथा विसर्जन घाटों की मरम्मत का जायजा लिया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को लंबित कार्य तत्काल पूरा करने, पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था करने और मजबूत सुरक्षा बैरिकेड्स लगाने के निर्देश दिए। वाला तालाब के तीनों विसर्जन घाटों पर पिछले वर्ष गणेश एवं दुगार्माता की मूर्तियों के विसर्जन से जमा हुई गाद को पोकलेन की मदद से हटाया जा रहा है। आयुक्त ने कहा कि गाद निकालने का काम समय पर पूरा किया जाएगा, जिससे गणेश विसर्जन के दौरान श्रद्धालुओं को किसी तरह की परेशानी न हो। गणेशोत्सव के दौरान संभावित भीड़ को देखते हुए स्थानीय जरूरतों और व्यवस्थाओं पर भी चर्चा की गई। विसर्जन स्थल पर तकनीकी कर्मचारियों, आपातकालीन बचाव दल और पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। मनपा प्रशासन ने नागरिकों की सुरक्षा के साथ पर्यावरण अनुकूल गणेशोत्सव के लिए पूरी तैयारी करने की बात कही।

समाजवादी पार्टी के पालघर जिला कार्यालय का किया गया उद्घाटन

पालघर(उत्तरशक्ति)। समाजवादी पार्टी के पालघर जिला कार्यालय का उद्घाटन उत्साहपूर्ण माहौल में किया गया। इस अवसर पर पार्टी के नवनियुक्त पदाधिकारियों का अभिनंदन किया गया तथा संगठन को मजबूत करने, अधिक से अधिक कार्यकताओं को जोड़ने और आगामी राजनीतिक रणनीति को लेकर विस्तृत चर्चा हुई। कार्यक्रम में समाजवादी पार्टी के पालघर जिला अध्यक्ष कैलाश नाथ यादव, जिला उपाध्यक्ष संजय विश्वकर्मा, जिला प्रवक्ता अरुण यादव, जिला कोषाध्यक्ष अवधराज यादव, युवा जिला अध्यक्ष राकेश यादव सहित वीरेंद्र यादव, मुकेश विश्वकर्मा एवं प्रवीण यादव प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। इसके अलावा पालघर जिला उपाध्यक्ष मोहम्मद खान, जिला सचिव विनोद वर्मा, जिला सचिव जितेंद्र यादव, पालघर तहसील अध्यक्ष चुन्नूकुमार श्रीवास्तव, तहसील उपाध्यक्ष अतुल श्रीवास्तव, जिला मीडिया प्रभारी पराग यादव, जिला युवा सचिव राज श्रीवास्तव तथा जिला युवा सचिव सनी सिंह सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे। कार्यालय उद्घाटन के पश्चात नवनियुक्त पदाधिकारियों को समाजवादी पार्टी का पट्टा पहनाकर सम्मानित किया गया। सभी नियुक्तियां समाजवादी पार्टी पालघर जिला अध्यक्ष कैलाश नाथ यादव के हस्ताक्षर से जारी नियुक्ति पत्र के आधार पर की गईं। बैठक में पालघर जिले के विभिन्न क्षेत्रों में संगठन के विस्तार को लेकर रणनीति पर चर्चा की गई। पदाधिकारियों ने कहा कि पार्टी को जमीनी स्तर पर मजबूत करने के लिए नए कार्यकताओं को संगठन से जोड़ना आवश्यक है। साथ ही स्थानीय नागरिकों की समस्याओं को प्रमुखता से उठाकर उनके समाधान के लिए प्रभावी ढंग से आवाज बुलंद करने पर जोर दिया गया।

अंतरराष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस पर डॉ आरए फाउंडेशन द्वारा 6 विभूतियों को अमृत जीवन सम्मान

मुंबई (उत्तरशक्ति)। अंतरराष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस (21 अगस्त) के अवसर पर डॉ.आर.ए.तिवारी फाउंडेशन (पंजीकृत) द्वारा स्थापित अमृत जीवन सम्मान 2026 छह समाज विभूतियों (75+) - डॉ सुधाकर मिश्रा (पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष एलिफिंस्टन कालेज, साहित्यकार, शोध निर्देशक), दाताप्रसाद (डी.पी.) त्रिपाठी (सी.ए.), मुरलीधर पाण्डेय (पत्रकार, साहित्यकार, पूर्व बैंकर), वैद्य श्री बी.बी.चौबे 'रसिक' (संस्थापक शैक्षणिक संस्थान), कवि, समाजसेवी), डॉ.सागर त्रिपाठी (समाजसेवी, कवि , गजलकार, भवन निमार्ता) लालता प्रसाद विश्वकर्मा (समाजसेवी, राजनीतिक कार्यकर्ता) को दहिसर पूर्व , मुंबई -68 स्थित भारतीय सदविचार मंच सभागार में ट्रस्ट के संस्थापक, चेयरमैन डॉ राधेश्याम तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया। सम्मानित हुई उपरोक्त इन सामाज विभूतियों को , अयोध्या में स्थापित भगवान श्री राम की प्रतिमूर्ति

अभिनंदन पत्र, अंगवस्त्रम , श्री मद्भागवत गीता पुस्तक,और उपहार भेंट किया गया। ट्रस्टी, मंत्री डॉ.शिवश्याम तिवारी , ट्रस्टी, कोषाध्यक्ष डॉ.संदीप तिवारी , ट्रस्ट सलाहकार शिक्षाविद् डॉ. हृदयनारायण मिश्रा , वरिष्ठ पत्रकार, आरटीआई विशेषज्ञ अनिल गलगली, वरिष्ठ पत्रकार,यश भारत के संपादक , अभय मिश्रा ने सम्मान मूर्तियों का स्वागत किया। स्वास्थ्य कारणों से डॉ सागर त्रिपाठी कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो पाये।कार्यक्रम सारथी, समन्वय संकल्प के अध्यक्ष श्री अनिरुद्ध पाण्डेय ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया। ट्रस्ट शुभचिंतक पं.कमलाशंकर मिश्रा ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर समाजसेवी सुभाषचंद्र उपाध्याय, डॉ उमेशचन्द्र शुक्ला (हिंदी विभागाध्यक्ष,एम.डी, कालेज, साहित्यकार),श्री गौरीशंकर मित्तल जू.कालेज के पूर्व प्रधानाचार्य पी.ए.द्विवेदी, समाजसेवी , शिव सेना नेता अशोक तिवारी, विनोद सिंह, डॉ.किशोर सिंह, टेक्नोक्रेट दिनेशचन्द्र उपाध्याय, समाजसेवी, डॉ.नूतन पाण्डेय,निशा तिवारी,वरिष्ठ शिक्षक, लेखक गिरिजाशकर त्रिपाठी,पत्रकार राजेश विक्रांत, पत्रकार राजकिशोर तिवारी, एडवोकेट सत्यव्रत उपाध्याय, समाजसेवी, ब्रह्मदेव तिवारी , भारतीय सदविचार मंच के महामत्री नागेन्द्र मिश्रा और सैकड़ों गणमान्य उपस्थित थे। राष्ट्र गान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

जिंदगी खूबसूरत है निक्की शर्मा रश्मि

मुम्बई (उत्तरशक्ति)। मुंबई ज़िंदगी खूबसूरत है। हर पल तब और भी हसीन हो जाता है जब दोस्तों का साथ हो, सावन की फुहार हो, हरियाली हो, साथ में बारिश की बूंदें हों, पुरानी यादें हों। नाचना-गाना, शरारत और कुछ पल साथ बिताना–सबसे खूबसूरत पलों में से एक, यादगार लम्हा बन जाता है। सावन की फुहार और दोस्तों का साथ मानो हर गम, हर तकलीफ, हर जिम्मेदारी से बाहर निकालकर हमें अपनी ज़िंदगी जीने का मौका देते हैं। बस हम और हमारे दोस्त... यही सबसे खूबसूरत समय होता है। सावन की मस्ती के साथ दोस्तों का साथ मानो हर बार एक नई ऊर्जा भर देता है। अपनी रूटीन से बाहर निकलकर कुछ खुशियां बटोरकर, नई ऊर्जा के साथ हम वापस अपने घर लौट आते हैं। यह नई ऊर्जा हमारे जीवन को ताजगी देती है।

सावन की हर बूंद के साथ शुरू होता है सजना-सँवरना। महिलाओं के लिए यह खास समय होता है। यह एक उत्सव की तरह मनाया जाता है। सोलह श्रृंगार में सजी सभी महिलाएँ सावन मिलन का उत्सव करती हैं, एक-दूसरे के साथ अपना समय बिताती हैं और खूबसूरत यादों को लेकर वापस लौट जाती हैं। दोस्ती, हंसी और सावन की फुहार मानो जन-जन का साथ बन जाता है। सारी खुशियां एक तरफ और दोस्तों के साथ बिताया पल एक तरफ। सावन की बूंदें पेड़-पौधों को हरा-भरा करती हैं, साथ ही दोस्ती के रिश्तों को भी ताजा कर देती हैं। सावन की फुहार की हर बूंद मानो हरियाली और खुशियों का एहसास होती है। इस तरह दोस्तों के साथ मिलते ही चेहरों पर रौनक आ जाती है और चारों तरफ हरियाली छा जाती है। सावन उत्सव और दोस्तों का साथ–नृत्य, संगीत, सोलो डांस, गीत, कजरी और विभिन्न खेलों के साथ दोस्तों का प्यार सब सावन की फुहार जैसा आनंद से भर देता है। चारों तरफ हरियाली हो जाती है। इस तरह दोस्तों का साथ मन को हर्षित करता और ताजा कर देता है। सावन एक पवित्र और सांस्कृतिक उत्सव होता है और दोस्तों का साथ मजा दुगना कर देता है। दोस्तों के साथ मस्ती ज़िंदगी को खूबसूरत बना देती है। तो खूब मस्ती कीजिए और ज़िंदगी को खूबसूरत रहने दीजिए। सावन और दोस्ती का रिश्ता बहुत खूबसूरत है। सावन मिलन में दोस्तों के साथ प्यार का मजा ही अलग है।

सावन उत्सव और दोस्ती पर महिलाओं के विचार:

निद्रीता राय - लंबे अरसे बाद कुछ दोस्तों का साथ किसी अद्भुत खजाने की तरह है। मैं नहीं चाहती कि वो कभी हमसे नाराज हों या हमसे दूर हों। उन्हें याद करते ही मेरी सारी समस्याएँ दूर हो जाती हैं और ऐसा एहसास होता है। और जब उनसे दूर होती हूँ तो लगता है जैसे खजाना लूट गया। मेरी प्यारी सहेलियों।

मालाड के H2O लक्जरी स्पा सेंटर पर क्राइम ब्रांच का छापा

मुंबई (उत्तरशक्ति)। मुंबई मालाड पश्चिम के एवरशाइन नगर इलाके में मसाज की आड़ में कथित रूप से चल रहे देहव्यापार के रैकेट का मुंबई क्राइम ब्रांच यूनिट-8 ने पदार्फाश किया है। कार्रवाई के दौरान पुलिस ने H2O लक्जरी स्पा सेंटर से एक महिला और एक पुरुष संचालक को गिरफ्तार किया, जबकि वहां से चार पीड़ित युवतियों को रेस्क्यू किया गया है। जानकारी के अनुसार, क्राइम ब्रांच यूनिट-8, अंधेरी ईस्ट के पुलिस निरीक्षक गणेश माली के नेतृत्व में टीम ने बांगुरनगर पुलिस स्टेशन की सीमा में आने वाले शॉप नंबर 5, 6 और 7, वृंदावन सोसायटी, रुद्रा मेडिकल व एसबीआई बैंक के पास, एवरशाइन नगर, मालाड पश्चिम स्थित H2O लक्जरी स्पा सेंटर पर कार्रवाई की। पुलिस टीम ने पहले बोगस ग्राहक और पंच को स्पा सेंटर में भेजा। इसके बाद मिले संकेतों के आधार पर क्राइम ब्रांच की टीम ने छापा मारकर एक महिला और एक पुरुष संचालक को हिरासत में लिया। जांच के दौरान मसाज की आड़ में देहव्यापार चलाए जाने की जानकारी सामने आने के बाद चार पीड़ित युवतियों को सुरक्षित रेस्क्यू किया गया। स्पा मालिक की तलाश तेज

क्राइम ब्रांच अब गिरफ्तार दोनों संचालकों के साथ इस कथित रैकेट में शामिल अन्य लोगों और संभावित साझेदारों की भूमिका की जांच कर रही है। वहीं, H2O लक्जरी स्पा सेंटर का मालिक फिलहाल वांटेड बताया जा रहा है, जिसकी तलाश पुलिस द्वारा की जा रही है। बीएनएस और पीटा एक्ट के तहत कार्रवाई मुंबई क्राइम ब्रांच द्वारा गिरफ्तार आरोपियों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता और अनैतिक देह व्यापार (निवारण) अधिनियम पीटा एक्ट की विभिन्न धाराओं के तहत कानूनी कार्रवाई की प्रक्रिया शुरू की गई है। रेस्क्यू की गई चारों पीड़ित युवतियों को सुरक्षित महिला सुधारगृह भेजने की कानूनी प्रक्रिया भी पुलिस द्वारा की जा रही है। क्राइम ब्रांच की टीम अब इस मामले में स्पा सेंटर के नेटवर्क, संचालकों के संपर्कों और फरार मालिक की भूमिका समेत अन्य पहलुओं की गहन जांच कर रही है।

उत्तरशक्ति
* संपादकः ओमप्रकाश प्रजापति
* उप संपादकः प्रेम चंद मिश्रा
*प्रबंध संपादकः डा. शेषधर बिन्द
उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है।
पत्राचार कार्यालय:
उत्तरशक्ति (हिंदी दैनिक)
मुंबई-पुणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5, ए-337 ट्रक टर्मिनल डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल ऑटाफ हिल वडाला, मुंबई-37
मो.- 9554493941
email ID- uttarshaktinews@gmail.com

स्वामी: शरद फागूराम प्रजापति, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति द्वारा सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, यूनिट क्रमांक 4, तल मजला, एन.के. इंडस्ट्रियल स्टेट, आरे रोड, प्रवासी इंडस्ट्रियल एस्टेट, जवल, गेट क्रमांक 2, गोरेगांव (पूर्व), मुंबई-400063, महाराष्ट्र से मुदित एवं के-4, रूम नं. 8, ग्राउंड फ्लोर न्यू समता सहकारी को.ऑ. हां. सोसाइटी, एमएमआरडीए कॉलोनी कंजूरमार्ग (वेस्ट), जिला मुंबई- 400078, महाराष्ट्र से प्रकाशित। RNI NO. MAHHIN/2018/76092 * संपादक- ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति, समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के लिए उत्तरदाई तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद मुंबई न्यायालय के अधीन होंगे।
पत्राचार कार्यालय: मुंबई-पुणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5 ए-337 ट्रैक टर्मिनल, डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल, ऑटाफ हिल, वडाला मुंबई -37, मो.- 9554493941 email ID- uttarshaktinews@gmail.com

मानीकला हाल्ट के पास सड़क किनारे पानी में मिला शव

सिलाई करने गए शाहजफर की हुई पहचान, मौके से साइकिल भी बरामद

आफताब आलम

मानीकलां, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। खेतासराय थाना क्षेत्र के मानीकला हाल्ट के पास शनिवार सुबह सड़क किनारे पानी में एक व्यक्ति का शव मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई। पुलिस की जांच में मृतक की पहचान चौकियां गुरैनी निवासी 52 वर्षीय शाहजफर उर्फ मिस्टर, पुत्र स्व. अब्दुल कुद्दूस के रूप में हुई है। शव के पास से उनकी साइकिल भी बरामद हुई है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया और मामले की जांच शुरू कर दी है।

परिजनों के मुताबिक शाहजफर 20 अगस्त को सिलाई का काम करने के लिए मानीकला गए थे। देर रात तक घर वापस नहीं लौटने पर परिजनों ने उनकी तलाश शुरू की, लेकिन उनका कोई पता नहीं चल सका।

शनिवार सुबह कुछ महिलाएं धान की निराई के लिए जा रही थीं। इसी दौरान उनकी नजर सड़क किनारे पानी में पड़े एक व्यक्ति के शव पर पड़ी। शव के पास साइकिल भी मौजूद थी। महिलाओं के शोर मचाने पर आसपास के ग्रामीण और राहगीर मौके पर जुट गए।

सूचना मिलते ही खेतासराय थाना पुलिस मौके पर पहुंची और शव व साइकिल को कब्जे में लेकर पहचान कराने का प्रयास किया। कुछ ही देर बाद शव की पहचान शाहजफर के रूप में हो गई। पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण कर आसपास के लोगों से पूछताछ भी की।

शाहजफर की मौत किन परिस्थितियों में हुई, फिलहाल इसका स्पष्ट कारण सामने नहीं आया है। पुलिस विभिन्न पहलुओं से मामले की जांच कर रही है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के वास्तविक कारणों का पता चलने की संभावना है।

विकास कार्यों को प्राथमिकता दे रही योगी सरकार: गिरीश चंद्र यादव

कलेक्ट्रेट परिसर में 53.12 लाख से इंटरलॉकिंग व नाली निर्माण का शिलान्यास

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। कलेक्ट्रेट परिसर में अवस्थापना निधि के अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2025-26 में

स्वीकृत विकास कार्य का शनिवार को शिलान्यास किया गया। राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार खेल एवं युवा कल्याण गिरीश चंद्र यादव ने विकास भवन से जिला पंचायत कार्यालय तक 250 मीटर इंटरलॉकिंग एवं नाली निर्माण कार्य का शिलान्यास किया। इस विकास कार्य पर 53.12 लाख रुपये की लागत आएगी। कार्यदायी संस्था उत्तर प्रदेश आवास एवं विकास परिषद है। निर्माण कार्य पूरा होने के बाद कलेक्ट्रेट परिसर में आवागमन सुगम होने के साथ ही जल निकासी की व्यवस्था भी बेहतर होगी।

शिलान्यास के दौरान राज्यमंत्री गिरीश चंद्र यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश सरकार विकास कार्यों को प्राथमिकता देते हुए शहरों और सरकारी परिसरों में बेहतर मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करा रही है। उन्होंने कहा कि जौनपुर में भी सड़क, नाली, जल निकासी सहित आधारभूत सुविधाओं के विस्तार पर लगातार काम किया जा रहा है। कलेक्ट्रेट परिसर में होने वाला यह कार्य कर्मचारियों, अधिकारियों और यहां आने वाले आम लोगों के लिए सुविधाजनक साबित होगा। उन्होंने कहा कि सरकार का उद्देश्य विकास कार्यों को गुणवत्ता और समयबद्धता के साथ पूरा कराकर आम जनता को उसका सीधा लाभ पहुंचाना है। कलेक्ट्रेट परिसर में इंटरलॉकिंग और नाली निर्माण से जलभराव की समस्या कम होने के साथ परिसर की व्यवस्था भी बेहतर होगी।

मेडिकल कॉलेज में आपातकालीन व ट्रॉमा सेवाओं की व्यवस्थाओं का निरीक्षण

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। उमानाथ सिंह स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय एवं संबद्ध जिला चिकित्सालय जौनपुर में आपातकालीन एवं ट्रॉमा सेवाओं के

सुदृढ़ीकरण को लेकर राज्य नोडल अधिकारी एवं उत्तर प्रदेश ट्रॉमा टास्क फोर्स के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) एल.डी. मिश्रा ने निरीक्षण किया। उन्होंने ट्रायेज एरिया से निरीक्षण की शुरूआत करते हुए रळएटकबेड, रेड जोन, येलो जोन तथा इमरजेंसी विभाग के विभिन्न वार्डों में भर्ती मरीजों की स्थिति और उपलब्ध चिकित्सा व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

निरीक्षण के दौरान पूर्व भ्रमण की तुलना में व्यवस्थाओं में हुए सुधार पर उन्होंने संतोष व्यक्त किया। इसके बाद सर्जरी एवं ऑर्थो ओटी, आईसीयू, ट्रॉमा विभाग, पैथोलॉजी लैब, ब्लड बैंक और रेडियोडायग्नोसिस विभाग में प्रतिदिन दर्ज किए जाने वाले रिकॉर्ड व अभिलेखों की बारीकी से जांच की।

प्रो. मिश्रा ने इमरजेंसी विभाग में उपलब्ध आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं की सराहना करते हुए मरीजों को बेहतर और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। उन्होंने चिकित्सकों एवं कर्मचारियों से आपात स्थिति में मरीजों का तत्काल ट्रायेज कर उनकी गंभीरता के अनुसार प्राथमिकता तय करने तथा समयबद्ध उपचार सुनिश्चित करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आपातकालीन परिस्थितियों में उपचार में थोड़ी भी देरी मरीज के जीवन के लिए गंभीर परिणाम उत्पन्न कर सकती है।

इसके बाद उन्होंने संबद्ध जिला चिकित्सालय के इमरजेंसी एवं रेडियोडायग्नोसिस विभाग का निरीक्षण किया। जिला महिला चिकित्सालय पहुंचकर लेबर रूम और ऑपरेशन थिएटर की व्यवस्थाओं का भी जायजा लिया।

निरीक्षण के अंतिम चरण में चिकित्सा शिक्षकों, नर्सिंग अधिकारियों, छात्र-छात्राओं एवं कर्मचारियों के समक्ष पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से आपातकालीन एवं ट्रॉमा सेवाओं को मजबूत करने की कार्ययोजना प्रस्तुत की गई। इसमें त्वरित निर्णय, प्रभावी ट्रायेज, समयबद्ध उपचार, टीमवर्क, बेहतर समन्वय और उपलब्ध संसाधनों के समुचित उपयोग पर विशेष जोर दिया गया।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्रधानाचार्य प्रो. आर.बी. कमल, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक प्रो. ए.ए. जाफरी, चीफ प्राक्टर प्रो. रुचिरा सेठी, डीन एकेडमिक प्रो. तबस्सुम याशमिन समेत बड़ी संख्या में चिकित्सा शिक्षक, चिकित्सक, नर्सिंग अधिकारी एवं अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

आजमगढ़ दवा लेने जा रहे मां-बेटे को ट्रेलर ने कुचला, मौके पर मौत

दोहरीघाट (उत्तरशक्ति)। रामनगर पुलिस बूथ के पास शुक्रवार को दर्दनाक सड़क हादसे में बाइक सवार मां-बेटे की मौत हो गई। तेज रफ्तार ट्रेलर ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दी, जिससे दोनों ट्रेलर के नीचे आ गए और मौके पर ही उनकी जान चली गई। मृतकों की पहचान बड़हलगंज क्षेत्र के बेलवादाखिली गांव निवासी बिंदु देवी (42) पत्नी राजकुमार और उनके 16 वर्षीय पुत्र सूरज यादव के रूप में हुई है। बताया गया कि बिंदु देवी अपने बेटे के साथ बाइक से दवा लेने आजमगढ़ जा रही थीं। करीब 11 बजे रामनगर पुलिस बूथ के पास सामने से आ रहे तेज रफ्तार ट्रेलर ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि मां-बेटे बाइक समेत ट्रेलर के नीचे आ गए। चालक दोनों को कुचलते हुए ट्रेलर लेकर कुछ दूर तक चला गया। हादसे के बाद चालक ट्रेलर को छोड़कर फरार हो गया।

सूचना पर पहुंची दोहरीघाट पुलिस ने दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस ने ट्रेलर को भी कब्जे में ले लिया है। घटना की जानकारी मिलते ही परिजन मौके पर पहुंच गए। मां-बेटे की एक साथ मौत से परिवार में चीख-पुकार मच गई। परिजनों ने ट्रेलर चालक के खिलाफ तहरीर दी है। थानाध्यक्ष रामायण सिंह ने बताया कि तहरीर के आधार पर आवश्यक कार्रवाई की जा रही है। हादसे के बाद बेलवादाखिली गांव में शोक का माहौल है।

रोडवेज में आउटसोर्स व्यवस्था खत्म, चार हजार से अधिक कंडक्टरों की होगी भर्ती

लखनऊ (उत्तरशक्ति)। उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम में कंडक्टरों की भर्ती को लेकर बड़ा बदलाव किया गया है। अब कंडक्टरों की भर्ती आउटसोर्स के माध्यम से करने की प्रक्रिया समाप्त कर सीधे अनुबंध के आधार पर भर्ती किए जाने की तैयारी है। निगम क्षेत्रवार विज्ञापन जारी कर चार हजार से अधिक कंडक्टरों की भर्ती करेगा। बताया गया है कि परिवहन निगम की ओर से कंडक्टरों की आवश्यकता को देखते हुए शासन को विस्तृत प्रस्ताव भेजा गया था। शासन स्तर से आदेश जारी होने के बाद भर्ती प्रक्रिया आगे बढ़ाने की तैयारी की जा रही है। नई व्यवस्था में पुरुष कंडक्टरों को भी महिला कंडक्टरों की तर्ज पर निगम के साथ सीधे संविदा पर रखा जाएगा। परिवहन निगम के पास वर्तमान में 14,300 से अधिक बसों का बेड़ा है। निर्धारित मानक के अनुसार प्रत्येक बस पर औसतन 2.16 कंडक्टरों की आवश्यकता है। इस हिसाब से निगम को करीब 30,888 महिला और पुरुष कंडक्टरों की जरूरत है। वर्तमान में लगभग 26,633 कंडक्टर कार्यरत बताए जा रहे हैं। इस तरह करीब 4,255 कंडक्टरों की कमी है। निगम द्वारा क्षेत्रवार रिक्तियों का निर्धारण कर विज्ञापन जारी किए जाने की संभावना है। भर्ती प्रक्रिया शुरू होने के बाद बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार का अवसर मिलने की उम्मीद है। हालांकि भर्ती की तिथि, शैक्षिक योग्यता, आयु सीमा, चयन प्रक्रिया और आवेदन शुल्क समेत विस्तृत जानकारी आधिकारिक विज्ञापन जारी होने के बाद ही स्पष्ट होगी।

हादसे के बाद भी शाहगंज में डग्गामार वाहनों का संचालन जारी

बच्चों की सुरक्षा पर सवाल, वीडियो बनाने पर चालक ने दी गाड़ी चढ़ाने की धमकी

विशाल सोनी

शाहगंज,जौनपुर (उत्तरशक्ति)। शाहगंज में स्कूली वाहनों से जुड़े हादसों के बावजूद शाहगंज क्षेत्र में डग्गामार और मानकों की अनदेखी कर बच्चों

को ढोने वाले वाहनों का संचालन जारी है। मुंगराबादशाहपुर में हाल ही में स्कूल वैन और निजी बस की टक्कर में सात बच्चे घायल हुए थे। जांच में वैन मानकविहीन और उसकी आरसी निलंबित मिली थी।

इसके बावजूद शाहगंज में ऐसे वाहनों पर परिवहन विभाग की कार्रवाई नजर नहीं आ रही है। वाहनों की तस्वीर और वीडियो बनाने के दौरान एक चालक ने कथित तौर पर धमकी दी कि ह्लवीडियो बनाओगे तो गाड़ी चढ़ा देंगे।ह्व इससे वाहन चालकों के मनमाने रवैये और बच्चों की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। क्षेत्रवासियों ने वाहनों की फिटनेस, परमिट, बीमा, चालक की योग्यता और सुरक्षा मानकों की जांच की मांग की है।

एआरटीओ सत्येंद्र कुमार ने बताया कि मामले की जांच चल रही है। जल्द ही शाहगंज क्षेत्र में अभियान चलाकर नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहनों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने थाना समाधान दिवस के अवसर पर की जनसुनवाई

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जिलाधिकारी सैमुअल पाल एन. एवं पुलिस अधीक्षक कुंवर अनुपम सिंह के द्वारा थाना समाधान दिवस के अवसर पर थाना बक्शा में जनसुनवाई की गई। इस दौरान अधिकारियों द्वारा

फरियादियों की समस्याओं को गंभीरतापूर्वक सुना गया तथा संबंधित अधिकारियों को शिकायतों के गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध निस्तारण के निर्देश दिए गए। इसके उपरांत अधिकारियों द्वारा विभिन्न अभिलेखों का अवलोकन किया गया तथा थाना परिसर की व्यवस्थाओं का जायजा लिया गया। जिलाधिकारी द्वारा संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि थाना समाधान दिवस में प्राप्त शिकायतों का नियमानुसार त्वरित एवं प्रभावी निस्तारण सुनिश्चित किया जाए तथा शिकायतकर्ताओं को अनावश्यक रूप से परेशान न होना पड़े।

प्रदेश में आलू किसानों के लिए तीन महत्वपूर्ण योजनाएं शुरू, ऑनलाइन पोर्टल पर करें आवेदन

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जिला उद्यान अधिकारी डॉ. सीमा सिंह राणा ने बताया कि प्रदेश सरकार द्वारा आलू विकास योजनाओं एवं उनके प्रभावी क्रियान्वयन हेतु नवीन पोर्टल http://potato.uphorticulture.in शुरू किया गया है, जिसके माध्यम से किसान विभिन्न योजनाओं का लाभ ऑनलाइन आवेदन कर प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि आलू किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए भावाशाह भाव स्थिरता कोष योजना प्रारंभ की गई है। इस योजना के अंतर्गत आलू के बाजार मूल्य में गिरावट होने पर किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी। इसके लिए 1000 करोड़ रुपये का कोष स्थापित किया गया है। योजना के तहत प्रत्येक किसान अधिकतम 2 हेक्टेयर क्षेत्रफल तथा प्रति हेक्टेयर 240 क्विंटल आलू तक लाभ प्राप्त कर सकेगा। जिला उद्यान अधिकारी ने बताया कि आलू भंडारण शुल्क अनुदान योजना के अंतर्गत निजी शीतगृहों में भंडारित आलू पर किसानों को 100 रुपये प्रति क्विंटल की सहायता प्रदान की जाएगी। इस योजना में प्रति किसान अधिकतम 20 हजार रुपये तक की सहायता देय होगी। इसके अतिरिक्त आलू बीज मूल्य छूट योजना के तहत किसानों को नवीन एवं उच्च गुणवत्ता वाले आलू बीज खरीदने पर अधिकतम 1000 रुपये प्रति क्विंटल की छूट उपलब्ध कराई जाएगी।

उपरोक्त तीनों योजनाओं का संचालन ऑनलाइन आवेदन के माध्यम से किया जाएगा तथा स्वीकृत सहायता राशि लाभार्थियों के आधार से जुड़े बैंक खातों में डीबीटी के माध्यम से भेजी जाएगी। उन्होंने जनपद के अधिक से अधिक आलू उत्पादक किसानों से पोर्टल पर आवेदन कर योजनाओं का लाभ उठाने की अपील की है।

धूमधाम से मनाया गया अभी और अनी सैनी का जन्मदिन

सिंगरामऊ/जौनपुर (उत्तरशक्ति)। सिंगरामऊ क्षेत्र में 21 अगस्त को प्रमोद कुमार सैनी के दोनों भांजों अभी सैनी और अनी सैनी पुत्र अरुणेश कुमार सैनी का जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर परिवार के सदस्यों के साथ क्षेत्र के गणमान्य लोगों ने बच्चों को जन्मदिन की बधाई और शुभकामनाएं दीं। परिजनों के अनुसार बड़ा भांजा अभी सैनी सात वर्ष और छोटा भांजा अनी सैनी चार वर्ष के हो गए हैं। दोनों बच्चों ने केक काटकर सबसे पहले अपने दादा-दादी को खिलाया। इसके बाद उपस्थित लोगों ने बच्चों को उपहार भेंट कर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। प्रमोद कुमार सैनी ने कहा कि यह परिवार के लिए सौभाग्य की बात है कि दोनों भांजों का जन्म एक ही दिन यानी 21 अगस्त को हुआ है। उन्होंने जन्मदिन समारोह में शामिल होने वाले सभी लोगों के प्रति आभार जताया। इस अवसर पर दादा रामप्रसाद सैनी, राममिलन सैनी सहित अवधेश सैनी, ठेकेदार पप्पू यादव, बैंक कैशियर प्रशांत खरवार, विकास मौर्या, विकास सैनी, विपिन सैनी, बिट्टू खरवार, विमला देवी, सावित्री, सीमा, डिम्पल, ज्योति सैनी, वैष्णवी, अर्नव, गौरी सैनी समेत परिवारजन एवं क्षेत्र के सम्मानित लोग मौजूद रहे। उपस्थित लोगों ने दोनों बच्चों को आशीर्वाद देते हुए उनके सुखद एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

कोन हॉस्पिटल में प्रसूता की मौत के मामले में फरार आरोपी के घर नोटिस चस्पा

न्यायालय के आदेश पर धारा 84 बीएनएसएस के तहत कार्रवाई, 14 सितंबर तक पेश होने का निर्देश

कोन/सोनभद्र (उत्तरशक्ति)। अवैध रूप से संचालित ग्लोबल हॉस्पिटल में प्रसव के दौरान प्रसूता की मौत के मामले में फरार चल रहे आरोपी के खिलाफ पुलिस ने न्यायालय के आदेश पर कार्रवाई की है। पुलिस ने आरोपी नसीम अहमद के घर नोटिस चस्पा कर उसे 14 सितंबर 2026 तक न्यायालय अथवा सोनभद्र पुलिस के समक्ष उपस्थित होने के लिए निर्देशित किया है।

मामला 30 मई 2026 का है। सिंगा बागेसोती निवासी सीमा पत्नी देवनारायण को प्रसव के लिए ग्लोबल हॉस्पिटल ले जाया गया था। आरोप है कि अस्पताल में ऑपरेशन के दौरान महिला की मौत हो गई। घटना के बाद प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग की संयुक्त टीम ने अस्पताल की जांच की, जिसमें अस्पताल के अवैध रूप से संचालित होने की बात सामने आने पर उसे सील कर दिया गया था।

मामले में थाना कोन में मुकदमा अपराध संख्या 104/2026 के तहत धारा 105, 318(4) बीएनएस एवं धारा 34 राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज किया गया था। पुलिस के अनुसार आरोपी नसीम अहमद घटना के बाद से फरार चल रहा है।

पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा के निर्देशन में चलाए जा रहे अभियान के तहत न्यायालय सोनभद्र के आदेश पर धारा 84 बीएनएसएस की कार्रवाई की गई। चौकी प्रभारी चकरिया शिव प्रकाश यादव ने पुलिस टीम के साथ आरोपी के घर पहुंचकर नोटिस चस्पा किया तथा परिजनों को न्यायालय के आदेश की जानकारी दी। पुलिस के मुताबिक नसीम अहमद की गिरफ्तारी पर ?25 हजार और उसके एक अन्य सहयोगी पर 10 हजार का इनाम घोषित है। फरार आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस संभावित ठिकानों पर लगातार दबिश दे रही है।

जमीन पर पिलर खड़ा कर कब्जे का आरोप, विरोध करने पर दौड़ाया; पीड़ित पहुंचा एसपी दरबार

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। सुजानगंज थाना क्षेत्र के दीपकपुर गांव निवासी प्रदीप कुमार ने कुछ लोगों पर उनकी जमीन पर जबरन कब्जा करने और विरोध करने पर जान से मारने की धमकी देने का आरोप लगाया है। मामले को लेकर पीड़ित ने पुलिस अधीक्षक को प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है।

पीड़ित के अनुसार दीपकपुर गांव में स्थित उनकी आराजी संख्या 372/0.2140 की जमीन पर आजाद खान, दिलशाद खान और शौकत खान कथित रूप से जबरन पिलर खड़ा कर कब्जा करने का प्रयास कर रहे हैं। विरोध करने पर आरोपियों ने उन्हें दौड़ा लिया और जान से मारने की धमकी दी।

प्रदीप कुमार का आरोप है कि घटना की शिकायत लेकर वह सुजानगंज थाने पहुंचे, जहां उन्होंने एक दरोगा से अपनी समस्या बताई, लेकिन कथित तौर पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। पीड़ित ने बताया कि आरोपी पुलिस प्रशासन द्वारा कुछ नहीं बिगाड़ पाने की बात कहते हुए धमकी दे रहे हैं।

पीड़ित ने पुलिस अधीक्षक से मामले का संज्ञान लेकर जमीन पर हो रहे कथित अवैध निर्माण को रुकवाने, अपनी जान-माल की सुरक्षा सुनिश्चित कराने तथा आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उचित कानूनी कार्रवाई करने की मांग की है।

भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करना हमारी जिम्मेदारी- सुषमा पटेल

सखी वेलफेयर फाउंडेशन ने हरितालिका तीज उत्सव का किया आयोजन

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। सखी वेलफेयर फाउंडेशन द्वारा नगर के मंगलम लॉन में हरतालिका तीज उत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें सखियों ने राजस्थानी पोशाक में गीत, संगीत, नृत्य के साथ हर्षोल्लास पूर्वक बिघ्नहर्ता गणपति भगवान, देवाधिदेव शिव एवं माता पार्वती की पूजा अर्चना करके धूमधाम से त्यौहार मनाया।

कार्यक्रम में सर्व प्रथम मुख्य अतिथि सुषमा पटेल (पूर्व विधायक मुंगराबादशाहपुर), मनोरमा मौर्य (अध्यक्ष, नगर पालिका परिषद जौनपुर) संस्थाध्यक्ष प्रीति गुप्ता, रजनी सिंह (सदस्य, स्थायी लोक अदालत जौनपुर) एवं समस्त सखियों ने गणपति भगवान की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर पूजा अर्चना करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि सुषमा पटेल ने कहा कि आज की नारी अपने सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को संजोते हुए पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने की नैतिक जिम्मेदारी को अत्यंत सजगता से निभा रही है। उन्होंने सखी वेलफेयर फाउंडेशन द्वारा नारी सशक्तिकरण हेतु स्वास्थ्य, स्वावलंबन आदि के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा की।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि मनोरमा मौर्य ने सिलाई प्रशिक्षण कार्यशाला की प्रशिक्षिका मोनिका गुप्ता एवं प्रशिक्षु महिलाओं एवं बच्चियों को प्रशिक्षण प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

हरितालिका तीज उत्सव के इस पावन अवसर पर भगवान श्री गणेश एवं देवाधिदेव भगवान शिव को समर्पित समूह व एकल नृत्य से सखी शीला राय, तूलिका श्रीवास्तव, दीपा साहू, पिंकी जायसवाल, दिव्या साहू, अंजू जायसवाल, चेतना साहू, मीनू बरनवाल, संचिता बैंकर, रूपम शुक्ला, विभा साहू, उमा गुप्ता, मीना गुप्ता, संतोष गुप्ता, डॉ रेनू मौर्य आदि ने उपस्थित जनसमूह का मन मोह लिया। पहेली प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में उपस्थित सभी महिलाओं ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

इस अवसर पर संस्थाध्यक्ष प्रीति गुप्ता ने वर्ष पर्यंत पूर्ण मनोयोग से सखी वेलफेयर फाउंडेशन की गतिविधियों में हिस्सा लेने के लिए सभी सखियों को अंगवस्त्रम से सम्मानित किया तथा बेहतरीन कार्य करने के लिए सखी दिव्या साहू को बेस्ट सखी अवार्ड से सम्मानित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन महासचिव अर्चना सिंह तथा उपस्थित सभी के प्रति अभिनन्दन एवं आभार कार्यकारी अध्यक्ष तूलिका श्रीवास्तव ने व्यक्त किया।

इस अवसर पर सारिका सोनी, मनीषा सिंह, नीतू सिंह, स्वर्णिमा जायसवाल, सुजाता जायसवाल, आरती सिंह, सरिता निगम, शकुंतला मौर्य, शशि मिश्रा, रजनी साहू, शिप्रा द्विवेदी, साधना साहू, माधुरी गुप्ता, अंजू पाठक, डॉ सरला त्रिपाठी, डॉ अनीता त्रिपाठी, मिलन श्रीवास्तव, विमला श्रीवास्तव, माला वर्मा, स्वप्निल सिंह, उर्वशी सिंह, सुषमा श्रीवास्तव, अंजू सिंह, किरण सिंह, अंजू लता अग्रहरि, सोना बैंकर, रेनू बैंकर, मीना यादव, स्वप्निल श्रीवास्तव आदि तमाम लोग उपस्थित रहे।

आईसीएमआर–एसटीएस प्रोजेक्ट में एमबीबीएस छात्र आदर्श कुमार यादव का चयन होने पर मेडिकल कालेज जौनपुर के प्रधानाचार्य ने किया सम्मानित

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। उमानाथ सिंह स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय, जौनपुर के एमबीबीएस बैच 2025 के छात्र आदर्श कुमार यादव का प्रतिष्ठित इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (ICMR)– शॉर्ट टर्म स्टूडेंटशिप (रळर) प्रोजेक्ट के लिए चयन हुआ है। यह उपलब्धि संस्थान के लिए गौरव का विषय है तथा चिकित्सा विद्यार्थियों में शोध एवं वैज्ञानिक अभिरुचि को बढ़ावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

इस शोध परियोजना में डा0 अनिल कुमार, सहायक आचार्य, कम्युनिटी मेडिसिन विभाग का महत्वपूर्ण मार्गदर्शन रहा। उनके मार्गदर्शन में छात्र आदर्श कुमार यादव को शोध की वैज्ञानिक पद्धति, अध्ययन प्रक्रिया, डेटा संकलन एवं विश्लेषण तथा शोध कार्य के विभिन्न व्यावहारिक पहलुओं को समझने का अवसर प्राप्त हुआ।

इस उपलब्धि पर महाविद्यालय के प्रधानाचार्य प्रोफेसर (डा0) आर0 बी0 कमल ने छात्र आदर्श कुमार यादव को सम्मानित करते हुए कहा कि चिकित्सा शिक्षा के साथ-साथ शोध एवं अनुसंधान का भी विशेष महत्व है। विद्यार्थियों को प्रारंभिक स्तर से ही वैज्ञानिक सोच विकसित करने और शोध के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि आईसीएमआर-एसटीएस जैसी प्रतिष्ठित राष्ट्रीय स्तर की शोध परियोजना में छात्र का चयन महाविद्यालय की शैक्षणिक एवं शोध गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इससे अन्य विद्यार्थियों को भी चिकित्सा अनुसंधान के क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी। कम्युनिटी मेडिसिन विभाग के विभागाध्यक्ष डा0 अनुज सिंह एवं चिकित्सा शिक्षक डॉक्टर मुदित चौहान, डा0 पूजा पाठक, डा0 नवीन सिंह, डा0 आदर्श कुमार द्वारा छात्र को शोध कार्य के लिए आवश्यक शैक्षणिक एवं तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया गया। महाविद्यालय परिवार ने आदर्श कुमार यादव को उनकी इस उपलब्धि पर शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। यह सफलता उमानाथ सिंह स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय, जौनपुर में गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा शिक्षा के साथ-साथ शोध एवं अनुसंधान की संस्कृति को मजबूत करने की दिशा में एक प्रेरणादायक उपलब्धि है'

मानस परिवार सामाजिक सेवा संस्था रजि० का प्रथम स्थापना दिवस महोत्सव धूम धाम से सम्पन्न

जगदीश तिवारी

नालासोपारा (उत्तरशक्ति)। मानस परिवार सामाजिक सेवा संस्था के प्रथम स्थापना दिवस 21 अगस्त ,2026 दिन शुक्रवार को बालाजी बैंक्वेट हॉल में संपन्न हुआ। मानस परिवार सेवा संस्था के तरफ से अनेक गणमान्य व्यक्तियों के साथ साथ बहुत से मानस एवं भजन गायकों की उपस्थिति में हुई । संस्था के संस्थापक एवं संयोजक डॉ दिनेश चतुर्वेदी जी आए हुए अतिथियों को मानस परिवार के बारे में बताते हुए श्री सुन्दरकाण्ड एवं श्री रामचरितमानस पाठ को संस्था का मूल उद्देश्य बताए , अध्यक्ष राकेश सिंह, सचिव आचार्य बमशंकर शुक्ल, कोषाध्यक्ष ज्ञानप्रकाश चौबे, उपाध्यक्ष दिनेश चौबे एवं राजशेखर पाण्डेय, उप सचिव विष्णु प्रकाश दुबे, महामंत्री विवेक सिंह, संगठन मंत्री सुजीत मिश्र ने अतिथियों का स्वागत किया । संस्था के कानूनी सलाहकार एड हितेश चौबे ने मंच का संचालन किया।

उपस्थित गणमान्य जनों में दुबे मेडिकल कॉलेज के डायरेक्टर डॉ ओम प्रकाश दुबे जी, दुबे मेडिकल कॉलेज के अध्यक्ष जय प्रकाश दुबे, अर्थ हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ मिथिलेश मिश्र जी, संस्कृति बिल्डर ऐंड डेवलपर के डायरेक्टर प्रदीप चतुर्वेदी, एड एस. के. चतुर्वेदी, डॉ पूनम अभय सिंह, सुबोधानंद साधक महाराज आदि थे ।

संस्था के मार्गदर्शक मण्डल से श्री दिलीप मिश्र, वीरेंद्र मिश्र, जीतेंद्र सिंह, दिनेश पाण्डेय, नागेंद्र तिवारी, संतोष चतुर्वेदी, भूपेश तिवारी, अभय सिंह, सुभाष शुक्ल और संकुल पाठक उपस्थित रहे। विजय पाण्डेय को संस्था का मीडिया प्रभारी नियुक्त किया गया, अन्य सक्रिय सभासदों संजय चौबे, विकेश शुक्ल, योगेश तिवारी, अरुण पांडेय, महेश चतुर्वेदी , विनय त्रिपाठी , अजय दुबे , रमेश सिंह , डॉ विवेक सिंह, भोले दुबे, सुधीर त्रिपाठी, प्रभाकर तिवारी, चंद्रशेखर पाण्डेय, सुनील मिश्र, सुशील चौबे आदि का योगदान सराहनीय रहा। प्रमुख गायकों में पंकज पूरब, धर्मेंद्र सिंह, शिवेश मिश्र, रामानुज पाठक, राकेश उपाध्याय चंचल, निलेश तिवारी, विपिन तिवारी , सुशील मिश्र मासूम, अमन पाण्डेय, अम्बरिश तिवारी , आदित्य विश्वकर्मा, अच्छाई पाण्डेय, अभय पाण्डेय, ने अपनी उत्कृष्ट प्रस्तुति दी। ऑर्गन पर अनिल शर्मा, ढोलक पर मुकेश प्रजापति, पैड पर रितेश प्रजापति ने संगत किया। साउंड माखन माली द्वारा संचालित किया गया। इतने भव्य कार्यक्रम के सम्पन्न होने पर संस्था के संस्थापक एवं संयोजक डॉ दिनेश चतुर्वेदी जी ने सबकाए आभार प्रकट किया । यह जानकारी दैनिक उत्तर शक्ति समाचार पत्र के पत्रकार जगदीश तिवारी ने दी है।

मुंबई निरंतर बनी हुई है भारत की महत्वाकांक्षा और एक्सपीरियंस इकॉनॉमी की राजधानी

मुंबई। देश की प्रमुख कंज्यूमर फाइनेंस कंपनी होम क्रेडिट इंडिया ने आज अपनी सालाना रिपोर्ट द ग्रेट इंडियन वॉलट 2026 का चौथा संस्करण जारी किया, जिसकी थीम है, टैक्स राहत से लेकर असली बदलाव तक, कैसे बदल रहा है भारत का जेब खर्च। जीआईडब्ल्यू 4.0 स्टडी में यह साफ दिखा है कि लोगों की सोच में एक बड़ा बदलाव आया है, जिसकी वजह है कर्ज तक ज्यादा पहुंच और जीएसटी सुधारों के बाद मिली आर्थिक राहत। इन दोनों वजहों से रोजमर्रा के घरेलू खर्च का बोझ कुछ कम हुआ है, लोगों का आर्थिक भरोसा मजबूत हुआ है, और अपना घर खरीदना अब भी लोगों का सबसे बड़ा लंबी अवधि का आर्थिक लक्ष्य बना हुआ है।

होम क्रेडिट इंडिया के चीफ मार्केटिंग एंड पीपल ऑफिसर आशीष तिवारी ने कहा, ̋जब हमने 2023 में 'द ग्रेट इंडियन वॉलेट स्टडी' शुरू की थी, तब हम भारत की आर्थिक सोच को समझना चाहते थे। हमने पाया कि यह एक ऐसा देश है जो मकसद के साथ चलता है और वित्तीय मामलों में अत्यंत विवेकशील है इस साल के निष्कर्ष अत्यंत उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण रुझान दर्शाते हैं। आर्थिक चुनौतियों के बावजूद, जीएसटी के बाद कीमतों में हुए बदलाव से मिली असली राहत, और साथ में सही आर्थिक टूल का इस्तेमाल, लोगों के लिए संपत्ति निर्माण एवं व्यावसायिक विस्तार का मार्ग आसान बना रहा है। होम क्रेडिट इंडिया ग्रेट इंडिया वॉलट स्टडी 2026 के मुताबिक मुंबई अब भी भारत की महत्वाकांक्षा और एक्सपीरियंस इकोनॉमी की राजधानी के तौर पर अपनी पहचान बनाए हुए है। देश में रहने का खर्च सबसे ज्यादा होने के बावजूद, इस शहर के लोग आर्थिक तौर पर काफी मजबूत नजर आते हैं, क्योंकि वे जरूरी खर्च, अपनी मर्जी से किए जाने वाले खर्च और लंबी अवधि की आर्थिक इच्छाओं के बीच अच्छा संतुलन बना पा रहे हैं। इस स्टडी में यह भी सामने आया कि लोगों को डिजिटल फाइनेंशियल टूल पर काफी भरोसा है, और 54% लोगों ने कहा कि अचानक आने वाले खर्च को संभालना अब पहले से आसान हो गया है, जो दिखाता है कि लोग आर्थिक तौर पर पहले से बेहतर तैयार हैं।

अमित ढमाल के जन्मदिन पर मानवता कल्याण विश्व प्रतिष्ठान एसोसिएशन का सामाजिक उपक्रम

मुंबई। मानवता कल्याण विश्व प्रतिष्ठान एसोसिएशन की ओर से संस्था के कुर्ला-कालिना विधानसभा अध्यक्ष अमित अंकुश ढमाल के जन्मदिन के अवसर पर 21 अगस्त 2026 को सामाजिक उपक्रम का आयोजन किया गया। संस्था के संस्थापक एवं अध्यक्ष मो. वसीम वकील अहमद खान के मार्गदर्शन में कुर्ला स्थित एल.बी.एस. रोड, लाइन्स गार्डन में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। अमित ढमाल के जन्मदिन के अवसर पर केवल जन्मदिन मनाने तक सीमित न रहते हुए सामाजिक जिम्मेदारी निभाते हुए दिव्यांग, वरिष्ठ नागरिकों और जरूरतमंद लोगों को आवश्यक सहायता सामग्री वितरित की गई। इस दौरान व्हीलचेयर, वॉकिंग स्टिक, पहचान पत्र, प्रमाणपत्र, सम्मान पत्र और सम्मान चिन्ह प्रदान किए गए। कार्यक्रम का उद्देश्य दिव्यांग और जरूरतमंद नागरिकों को दैनिक जीवन में आवश्यक सहायता उपलब्ध कराना तथा उन्हें समाज की मुख्यधारा में सम्मान के साथ जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करना था। जन्मदिन के अवसर पर सामाजिक सेवा के माध्यम से समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाने का संदेश भी दिया गया। इसके साथ ही मानवता कल्याण विश्व प्रतिष्ठान एसोसिएशन के कार्यालय में भी दिव्यांग, वरिष्ठ नागरिकों और जरूरतमंद नागरिकों को सहायता सामग्री वितरित की गई। जरूरतमंद लोगों को व्हीलचेयर, वॉकिंग स्टिक, पहचान पत्र, प्रमाणपत्र, सम्मान पत्र एवं सम्मान चिन्ह देकर उनका सम्मान किया गया। इस पहल के माध्यम से जरूरतमंद नागरिकों को प्रत्यक्ष सहायता उपलब्ध कराने के साथ उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने का प्रयास किया गया। संस्था की ओर से भविष्य में भी जरूरतमंद और वंचित वर्गों के लिए विभिन्न सामाजिक गतिविधियां जारी रखने का संकल्प व्यक्त किया गया। कार्यक्रम में संस्था के मुंबई शहर पब्लिक रिलेशन ऑफिसर निसार अहमद शेख उर्फ बब्लू, वार्ड क्रमांक 162 अध्यक्ष दिन मो. चौधरी, नेहरू नगर विधानसभा उपाध्यक्ष हनुमंता तुपुधुर सहित संस्था के पदाधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उपस्थित रहे। इस सामाजिक उपक्रम को संस्था के फाउंडर डायरेक्टर मो. वसीम वकील अहमद खान, मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीओ) सारिका अशोक लोखंडे, महिला सेक्रेटरी नर्गिस फारुखी, वाल्मीकि समाज सहायक उपाध्यक्ष रेखा मंदोदिया, सहयोगी पदाधिकारी शबनम सैयद तथा कुर्ला पब्लिक रिलेशन ऑफिसर सबिना कुरैशी के सहयोग से आयोजित किया गया।अमित ढमाल के जन्मदिन पर आयोजित इस कार्यक्रम के माध्यम से ह्यजन्मदिन की खुशी समाज के जरूरतमंद लोगों के साथ बांटनेह्न का मानवतावादी संदेश दिया गया। दिव्यांग, वरिष्ठ नागरिकों और जरूरतमंद लोगों को सहायता प्रदान कर मानवता कल्याण विश्व प्रतिष्ठान एसोसिएशन ने सामाजिक सेवा और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

मानव कल्याण शक्ति ज्योति फाऊंडेशन के तत्वावधान में होगा श्रावणी उपाकर्म महोत्सव 28 को

नालासोपारा (उत्तरशक्ति)। मानव कल्याण शक्ति ज्योति फाउंडेशन रजि. ठक्क द्वारा संचालित संस्कार जागरूकता अभियान के अंतर्गत प्राचीन एवं लुप्तप्राय वैदिक संस्कारों के पुनर्जागरण के उद्देश्य से श्रावणी उपाकर्म महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन 28 अगस्त 2026, शुक्रवार को प्रातः 5 बजे से 9 बजे तक गजानन्द हाईस्कूल प्रांगण, प्रगति नगर, नालासोपारा पूर्व में संपन्न होगा। आयोजक संस्था की ओर से समस्त सनातनीय कर्मकाण्डी ब्राह्मणों, पंडितों, मंदिरों में नियुक्त देव पूजकों, ज्योतिषियों, कथा वाचकों, धर्म गुरुओं सहित सनातन धर्मावलंबियों से इस पावन वैदिक अनुष्ठान में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने का आह्वान किया गया है। संस्था के अनुसार, श्रावणी उपाकर्म केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि वैदिक परंपराओं और संस्कारों को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण माध्यम है। उपाकर्म के माध्यम से यज्ञोपवीत धारण करने वाले द्विजों द्वारा वैदिक परंपरा के अनुरूप आत्मशुद्धि, ऋषि स्मरण एवं अपने स्वाध्याय और संस्कारों के प्रति पुनः संकल्प लिया जाता है। आयोजकों ने कहा कि वर्तमान समय में अनेक प्राचीन वैदिक संस्कार धीरे-धीरे समाज से दूर होते जा रहे हैं। ऐसे में इन संस्कारों को पुनर्जीवित कर जन-जन तक पहुंचाना और युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति एवं परंपराओं से जोड़ना सामूहिक जिम्मेदारी है। फाउंडेशन ने सभी सनातन बंधुओं से अपील की है कि वे स्वयं कार्यक्रम में शामिल होने के साथ-साथ अन्य लोगों को भी प्रेरित करें। आयोजन का उद्देश्य एकजुट हों, संस्कार जागृत करें और सनातन को सशक्त बनाएं के संदेश को जन-जन तक पहुंचाना है। आयोजकों ने सभी श्रद्धालुओं का हार्दिक स्वागत एवं सादर आमंत्रण किया है। यह जानकारी वरिष्ठ पत्रकार प्रेम चौबे ने दी है।

कंकड़ेऊ खुर्द के विद्यालय में किया स्वास्थ्य परीक्षण

झुंझुनू। जिले के कंकड़ेऊ खुर्द ग्राम की राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में शनिवार को चल रहे चरक सप्ताह के अंतर्गत आयुर्वेद मेडिकल एसोसिएशन के बैनर तले आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी डॉ रामा कस्वॉ द्वारा विद्यार्थियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। मिली जानकारी के अनुसार इस दौरान इस विद्यालय के 27 छात्र-छात्राओं का स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें लाक्षणिक चिकित्सा भी दी गई और स्वास्थ्य परीक्षण के तहत विद्यार्थियों में खून की कमी(एनीमिया),आंखों की दृष्टि सहित विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं की जांच की भी गई।जिन विद्यार्थियों में स्वास्थ्य संबंधी कमियां जांच के दौरान पाई गईं,उन्हें आवश्यकतानुसार दवाइयां वितरित की गईं तथा स्वास्थ्य संबंधी उचित परामर्श भी दिया। इसके अलावा विद्यार्थियों को नियमित दिनचर्या अपनाने,पौष्टिक भोजन लेने तथा अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने के लिए भी प्रेरित किया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य जयसिंह जी एवं शारीरिक शिक्षक राजेश कुमार जी ने आयुर्वेद कर्मियों का आभार जताते हुए जागरुक कार्यक्रम के लिए साधुवाद दिया। इस कार्यक्रम में अन्य स्टाफ का भरपूर सहयोग भी रहा।

डेडूवाना के पीएम श्री प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक-अभिभावक बैठक

डीबीटी की 1200 धनराशि से बच्चों के लिए यूनिफॉर्म, जूते-मोजे व स्टेशनरी खरीदने की अपील

केराकत,जौनपुर (उत्तरशक्ति)। पी.एम. श्री प्राथमिक विद्यालय डेडूवाना में शनिवार को प्रधानाध्यापक संतोष राजभर के संयोजन में शिक्षक-अभिभावक बैठक आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के चित्र पर पुष्प अर्पित कर किया गया। बैठक में बड़ी संख्या में अभिभावकों ने भाग लिया और बच्चों की शिक्षा, नियमित उपस्थिति तथा विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों पर विस्तार से चर्चा की।

प्रधानाध्यापक संतोष राजभर ने बताया कि जिलाधिकारी जौनपुर के निर्देश पर बैठक का उद्देश्य डीबीटी (डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर) के माध्यम से अभिभावकों के खातों में भेजी गई 1200 की धनराशि के उचित उपयोग को सुनिश्चित करना है। उन्होंने अभिभावकों से अपील की कि उक्त धनराशि से बच्चों के लिए यूनिफॉर्म, स्टेशनरी, जूते, मोजे और स्वेटर अवश्य खरीदें, ताकि विद्यार्थियों को विद्यालय आने में किसी प्रकार की असुविधा न हो। उन्होंने अभिभावकों से लगातार अनुपस्थित रहने वाले विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान देने तथा उनकी नियमित उपस्थिति सुनिश्चित कराने का आग्रह किया। बैठक में सत्र परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं के अभिभावकों को सम्मानित कर उनका उत्साहवर्धन भी किया गया। इस दौरान मध्यान्ह भोजन योजना की गुणवत्ता बनाए रखने पर भी चर्चा हुई। बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने के उद्देश्य से प्रतिदिन प्रार्थना सभा में किसी न किसी समाचार पत्र का वाचन कराने का निर्णय लिया गया। उपस्थित अभिभावकों ने भी समाचार पत्र के नियमित वाचन को बच्चों के ज्ञानवर्धन के लिए उपयोगी बताया।

प्रधानाध्यापक ने कहा कि प्रमुख सचिव, बेसिक शिक्षा के निर्देशानुसार बच्चों को मोबाइल स्क्रीन से दूर रखते हुए किताबों, पत्रिकाओं और समाचार पत्रों के अध्ययन के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इससे बच्चों की भाषा, सामान्य ज्ञान और पठन क्षमता का समग्र विकास होगा। बैठक के अंत में अभिभावकों से बच्चों की शिक्षा में सक्रिय सहयोग देने और विद्यालय के साथ निरंतर संवाद बनाए रखने की अपील की गई।

रोचेस्टर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी ने वैश्विक शिक्षा और नवाचार पर चर्चा का किया आयोजन किया

मुंबई। अमेरिका की लगभग 2 सदी पुरानी और अपने एक्सपेरिमेंटल एजुकेशन थ्रू कोआपरेटिव एजुकेशन और इंटर्नशिप के लिए मशहूर यूनिवर्सिटी 'रोचेस्टर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी' ने मुंबई में एक विशेष शाम का आयोजन किया। यह इवेंट इंटरनेशनल हायर एजुकेशन के भविष्य पर केंद्रित था और इसमें मुंबई के मशहूर वड़ा पाव को भी सेलिब्रेट किया गया। इस इवेंट में 120 से ज्यादा स्कूल प्रिंसिपलों, काउंसलर्स और शैक्षिक दिग्गजों ने हिस्सा लिया। उन्होंने स्टूडेंट मोबिलिटी, शिक्षा में नए ट्रेंड्स और भारतीय स्कूलों व वैश्विक यूनिवर्सिटीज के बीच बेहतर तालमेल के तरीकों पर चर्चा की। यह इवेंट रोचेस्टर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के उस फोकस को दिखाता है जिसमें वह अपनी वैश्विक उपस्थिति बढ़ाने और छात्रों में वैश्विक सोच विकसित करने पर जोर देता है। यूनिवर्सिटी का उद्देश्य छात्रों को अलग-अलग संस्कृतियों, क्षेत्रों और देशों में सीखने, काम करने और योगदान देने के लिए तैयार करना है। फ्क्क्ळ के लिए वैश्विक शिक्षा का मतलब सिर्फ.यह नहीं है कि छात्र कहाँ पढ़ते हैं। बल्कि, इसका मतलब उस ज्ञान, अनुभव और स्किल्स से भी है जो वे तेजी से आपस में जुड़ती जा रही दुनिया में आत्मविश्वास के साथ हिस्सा लेने के लिए हासिल करते हैं। इस इवेंट में बोलते हुए रोचेस्टर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में एनरोलमेंट मैनेजमेंट और एसोसिएट प्रोवोस्ट की वाइस प्रेसिडेंट कैथलीन बी. डेविस ने कहा, भारत दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण शैक्षिक बाजारों में से एक बना हुआ है। ऐसा सिर्फ.इसलिए नहीं है कि अंतरराष्ट्रीय शिक्षा में छात्रों की बहुत ज्यादा दिलचस्पी है, बल्कि इसलिए भी है क्योंकि आज के छात्र ज्यादा स्पष्टता, बढ़ रहे हैं। वे संस्थानों को बहुत व्यापक नजरिए से देख रहे हैं और ऐसे माहौल की तलाश में हैं जहाँ सीखने की प्रक्रिया में रिसर्च, इनोवेशन, प्रैक्टिकल अनुभव और वैश्विक दृष्टिकोण शामिल हों। रोचेस्टर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी की एनरोलमेंट मार्केटिंग & ग्लोबल स्ट्रेटजिक इनिशिएटिव्स, अश्ढ एलिजाबेथ सुल्लिवन ने इस मौके पर कहा, शिक्षा का भविष्य सिर्फ.इस बात पर निर्भर नहीं करता कि छात्र क्या जानते हैं, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करता है कि वे आपस में जुड़ी दुनिया में अपनी जानकारी का कितनी अच्छी तरह उपयोग कर सकते हैं।

रतनपुर जनता इंटर कालेज मे जागरूकता कार्यक्रम हुई आयोजित ,छात्राओं ने सक्रिय भागीदारी दिखाई और निर्भीक होकर पूछे सवाल

जितेन्द्र कनोजिया

केराकत, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। स्थानीय क्षेत्र के रतनपुर ग्राम में स्थित जनता इंटर कॉलेज में शनिवार को आस्था महिला एवं बाल विकास संस्था (मेरी मुस्कान प्रोजेक्ट) के तहत जागरूकता कार्यक्रम आयोजित की गई।कार्यक्रम का उद्देश्य बाल विवाह, बाल तस्करी, बाल श्रम, साइबर क्राइम एवं पाक्सो एक्ट के बारे में किशोरियों को जानकारी देना और उसके अधिकारों और सुरक्षा के उपाय के बारे में बताना था। संस्था के प्रशिक्षकों ने बच्चों के अधिकार,पाक्सो एक्ट के प्रावधान, बाल विवाह और बाल श्रम के दुष्प्रभाव तथा कैसे जोखिम की पहचान कर सुरक्षित रहे इसकी विस्तृत जानकारी दी।साथ ही साइबर क्राइम और ऑनलाइन सुरक्षा सत्र में किशोरियों को सोशल मीडिया पर सुरक्षित व्यवहार, पर्सनल जानकारी न साझा करने और गम्भीर मामलों में पुलिस हेल्पलाइन, 1098/181 के साथ ही प्रतिभागियों को कानूनी कार्रवाई के विकल्प, आसपास उपलब्ध सरकारी व गैर-सरकारी संसाधन और स्थानीय सहायता प्रणाली की जानकारी दी गई।

कार्यक्रम के दौरान इंटरेक्टिव सत्र और प्रश्नोत्तर भी शामिल किए गए जिसमें छात्राओं ने सक्रिय भागीदारी दिखाई और निर्भीक होकर अपने सवाल पूछे।इस बाबत संस्था के प्रमुख संतोष कुमार पांडेय ने कहा कि समुदाय, स्कूल और परिवार मिलकर ही बच्चों को सुरक्षित और सशक्त बना सकते हैं। किसी भी प्रकार के शोषण या हिंसा की सूचना मिलने पर तुरंत स्थानीय पुलिस या बाल संरक्षण अधिकारी से संपर्क करें।इस अवसर पर प्रधानाचार्या रजनी द्विवेदी,शिक्षक राजेश प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर बंदना कुमारी सविता,शीला व दीपनारायण समेत तमाम लोग मौजूद रहे।

नहर की जद में जमीन, फिर भी मुआवजा नहीं; जन चौपाल में छलका ग्रामीणों का दर्द

सुशील कुमार तिवारी

महुली/दुद्धी, सोनभद्र (उत्तरशक्ति)। कनहर नहर परियोजना को लेकर शनिवार को महुली पंचायत भवन में आयोजित जन चौपाल में प्रभावित किसानों की समस्याएं प्रमुखता से उठीं। सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, उत्तर प्रदेश के कनहर सिंचाई परियोजना खंड-4 की ओर से आयोजित चौपाल में महुली, जोरूखाड़, फुलवार, पोलवा सहित आसपास के गांवों से पहुंचे ग्रामीणों ने नहर परियोजना की जद में आ रही जमीन के बदले उचित मुआवजे की मांग अधिकारियों के समक्ष रखी। ग्रामीणों ने बताया कि कनहर नहर परियोजना के लिए कई किसानों की जमीन प्रभावित हो रही है, लेकिन अब तक उन्हें मुआवजा नहीं मिल पाया है। ग्रामीणों का कहना था कि विकास परियोजना के लिए यदि उनकी भूमि ली जा रही है तो नियमानुसार उन्हें उनकी जमीन का उचित प्रतिकर मिलना चाहिए। डूब क्षेत्र की तर्ज पर मुआवजे की मांग जन चौपाल में ग्रामीणों ने कहा कि कनहर परियोजना के डूब क्षेत्र में प्रभावित परिवारों को मुआवजा दिए जाने की व्यवस्था की गई है। ग्रामीणों ने मांग की कि नहर से प्रभावित किसानों की भूमि का भी स्थलीय और अभिलेखीय सत्यापन कराकर पात्र लोगों को नियमानुसार मुआवजा दिया जाए। ग्रामीणों ने अधिकारियों के सामने अपनी भूमि, अभिलेख और मुआवजे से जुड़ी समस्याएं एक-एक कर रखीं। उन्होंने कहा कि परियोजना के कारण उनकी जमीन प्रभावित हो रही है, इसलिए उन्हें उनके अधिकार से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। अधिकारियों ने दिया कार्रवाई का भरोसा जन चौपाल में मुख्य अभियंता नीरज कुमार, अधीक्षण अभियंता कुंज बिहारी सिंह, सहायक अभियंता त्रिलोक नाथ झा, अशोक कुमार पांडेय, गुरु प्रसाद, संजय कुमार गुप्ता, सिकंदर शकील, अवर अभियंता आनंद कुमार, मनकेश कुमार, राजेश पटेल, वीरेंद्र कुमार, शिवानंद पाल एवं अनुज कुमार ने ग्रामीणों की समस्याएं सुनीं। अधिकारियों ने ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि भूमि और मुआवजे से संबंधित मामलों की नियमानुसार जांच कराई जाएगी। अभिलेखों एवं मौके की स्थिति के आधार पर पात्रता निर्धारित करते हुए आवश्यक कार्रवाई किए जाने का भरोसा दिया गया। जन चौपाल में ग्राम प्रधान महुली अरविंद जायसवाल, मंडल अध्यक्ष विंढमगंज वीरेंद्र चौधरी, ग्राम प्रधान फुलवार दिनेश यादव, पूर्व क्षेत्र पंचायत सदस्य रामकुमार यादव, पूर्व क्षेत्र पंचायत सदस्य मुकेश कुमार गुप्ता, रामलखन यादव, राजकुमार यादव, मुलायम यादव, अरुण कुमार गुप्ता, सुधीर कुमार समेत महुली, जोरूखाड़, फुलवार, पोलवा और आसपास के गांवों के सैकड़ों ग्रामीण मौजूद रहे। जन चौपाल के बाद अब प्रभावित किसानों की निगाहें विभागीय कार्रवाई पर टिकी हैं। ग्रामीणों को उम्मीद है कि उनकी भूमि से जुड़े मामलों का शीघ्र सत्यापन कर मुआवजे की समस्या का समाधान किया जाएगा।

मराठी एए5 ने दमदार कंटेंट के साथ मराठी स्ट्रीमिंग की दुनिया में अपनी मजबूत जगह बनाई

मुंबई। भारत में रीजनल कंटेंट के बढ़ते प्रभाव के बीच मराठी ZEE5 लगातार मराठी ओरिजिनल्स, फिल्मों और अलग-अलग तरह के कंटेंट में निवेश कर रहा है। मराठी कहानियों की गहराई, विविधता और संस्कृति को ध्यान में रखते हुए ZEE5 ने दर्शकों के बीच मजबूत पहचान बनाई है। पहले साल दर्शकों की अच्छी प्रतिक्रिया, ती दर्शकों की बढ़ संख्या और सफल ओरिजिनल्स के बाद अब मराठी ZEE5 ने दूसरे साल के लिए नए और अलग-अलग तरह कंटेंट के की घोषणा की है। इस नए कंटेंट के जरिए ZEE5 का लक्ष्य पूरे साल दर्शकों के लिए बेहतर और मनोरंजक मराठी कहानियां पेश करना है। मराठी ZEE5 के नए कंटेंट में लोकप्रिय फ्रेंचाइजी, नई ओरिजिनल सीरीज, सीधे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर रिलीज होने वाली फिल्में, सिनेमाघरों में रिलीज के बाद डिजिटल प्रीमियर और लाइव स्पोर्ट्र्स शामिल हैं। इससे मराठी दर्शकों को मनोरंजन का एक ही प्लेटफॉर्म पर मनोरंजन के कई विकल्प मिलेंगे। ZEE5 बड़े प्रोडक्शन हाउस और मराठी फिल्म जगत के जाने-माने निमार्ताओं के साथ भी काम कर रहा है। आने वाले कंटेंट में हे काय नवीन? सीजन 2 शामिल है, जिसमें उमेश कामत और प्रिया बापट फिर साथ नजर आएंगे। वहीं देवखेळ सीजन 2 में अंकुश चौधरी और प्राजक्ता माळी की जोड़ी वापसी करेगी। नई ओरिजिनल सीरीज में कौन यशवंत पानसरे? और 112 शामिल हैं। इन सीरीज के जरिए नई प्रतिभाओं, अच्छी कहानियों और अलग-अलग विषयों को दर्शकों तक पहुंचाने पर खास ध्यान दिया गया है। झी मराठी की चीफ चैनल ऑफिसर और मराठी ZEE5 की बिजनेस हेड वी. आर. हेमा ने कहा कि, मराठी ZEE5 शुरू करने का उद्देश्य मराठी दर्शकों के लिए एक खास स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म तैयार करना था। उन्होंने कहा कि आज ZEE5 लगातार मराठी ओरिजिनल कहानियों में निवेश कर रहा है। दर्शकों से मिल रही अच्छी प्रतिक्रिया से हमारा विश्वास और मजबूत हुआ है।

जाब नैशनल बैंक द्वारा विकसित भारत @2047 विषय पर अखिल भारतीय अंतर बैंक सेमिनार एवं नराकास अध्यक्ष सम्मेलन का आयोजन

मुंबई। पंजाब नैशनल बैंक द्वारा 20 अगस्त को प्रधान कार्यालय में विकसित भारत @2047 विषय पर अखिल भारतीय अंतर बैंक राजभाषा सेमिनार एवं बैंक के संयोजन में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के अध्यक्षों के सम्मेलन का आयोजन माननीय मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा) विशेष कुमार श्रीवास्तव की अध्यक्षता में किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि कुमार पाल शर्मा, संयुक्त निदेशक एवं परामर्शदाता, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के अतिरिक्त महाप्रबंधक आशीष करमरकर एवं विभागीय प्रमुख डॉ अनिल कुमार शर्मा की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर अतिथि महोदय तथा बैंक के उच्चाधिकारीगण द्वारा बैंक के राजभाषा विभाग द्वारा विकसित भारत @2047 विषय पर प्रकाशित पुस्तिका पीएनबी प्रवाह का विमोचन किया गया।

अध्यक्ष ने इस अवसर पर कहा कि पंजाब नैशनल बैंक हमेशा से ही बैंकिंग जगत के साथ-साथ राजभाषा के क्षेत्र में भी नई पहलों के लिए जाना जाता है। बैंक के संयोजन में समस्त 28 नराकास गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की अपेक्षानुसार अच्छा कार्य कर रही हैं। बैंक द्वारा ग्राहकों को सीबीएस, मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, एटीएम, पीएनबी वन ऐप, एसएमएस अलर्ट, व्हाट्सअप बैंकिंग तथा अन्य डिजिटल प्लेटफार्म्स पर राजभाषा हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं में सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। बैंक की वेबसाईट तथा ई-पोर्टल, प्रशिक्षण सामग्री, ई-परिपत्र इत्यादि भी द्विभाषी रुप में उपलब्ध हैं। पंजाब नैशनल बैंक अपने डिजिटल उत्पादों में हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग से कारोबार बढ़ा रहा है और राजभाषा कार्यान्वयन हेतु सदैव प्रतिबद्ध है। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में पंजाब नैशनल बैंक के राजभाषा कार्यान्वयन की प्रशंसा की और कहा कि बैंक राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रहा है। पंजाब नैशनल बैंक ने राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में दूसरों के लिए भी आदर्श स्थापित किया है। उन्होंने कहा कि हम सभी मूल रूप से सरल हिंदी में काम करें और राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करें।

इंदौर रात में ड्यूटी पर तैनात यातायात जवानों की सुरक्षा के लिए एक और कदम

-प्रणित नरेंद्र तिवारी

इंदौर (उत्तरशक्ति)। लाइट बैटन, रिफ्लेक्टर जैकेट के साथ अब शोल्डर ब्लिंकिंग लाइट भी प्रदान की जा रही। यातायात प्रबंधन पुलिस, इंदौर द्वारा यातायात व्यवस्था में लगे जवानों की सुरक्षा को और मजबूत करने के लिए लाइट बैटन, जैकेट के साथ अब शोल्डर ब्लिंकिंग लाइट भी प्रदान की जा रही है। रात्रि के समय चौराहों एवं प्रमुख मार्गों, नो एंट्री चेकिंग पॉइंट्स पर यातायात संचालन और चेकिंग के दौरान कम रोशनी के कारण ड्यूटी कर रहे जवानों की विजिबिलिटी प्रभावित हो सकती है। ऐसे में कंधे पर लगी ब्लिंकिंग लाइट जवान की मौजूदगी को दूर से ही स्पष्ट रूप से दिखाई देने योग्य बनाती है। इसका फायदा- वाहन चालकों को दूर से ही यातायात जवान की मौजूदगी दिखाई देगी। रात्रि में यातायात संचालन के दौरान सुरक्षा बढ़ेगी। चेकिंग प्वाइंट पर जवान की विजिबिलिटी बेहतर होगी। तेज गति से आने वाले वाहनों से होने वाले जोखिम को कम करने में मदद मिलेगी। बारिश, कम रोशनी और रात्रिकालीन ड्यूटी के दौरान सुरक्षा में अतिरिक्त सहायता मिलेगी। यह जानकारी प्रदीप व्यास ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से दी है।

विवाहिता की संदिग्ध मौत, फंदे से लटका मिला शव; पिता ने ससुरालियों पर लगाया हत्या का आरोप

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जलालपुर थाना क्षेत्र के बहादुरपुर गांव में शनिवार को 32 वर्षीय विवाहिता की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। महिला का शव घर के कमरे में पंखे से दुपट्टे के सहारे फंदे पर लटका मिला। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

मृतका की पहचान बहादुरपुर गांव निवासी सुरेंद्र प्रताप यादव की पत्नी मधु यादव के रूप में हुई है। मधु की शादी क्षेत्र के ही मेहरी गांव निवासी रामपति यादव की पुत्री मधु यादव से हुई थी। उसके एक पुत्र और एक पुत्री हैं। पति सुरेंद्र यादव रोडवेज में संविदा पर कंडक्टर के पद पर कार्यरत हैं। बताया गया कि शुक्रवार रात खाना खाने के बाद मधु अपने कमरे में चली गई थी। शनिवार भोर में परिवार के लोगों की नजर कमरे की खिड़की की ओर गई तो मधु पंखे से दुपट्टे के सहारे लटकी दिखाई दी। परिजनों ने दरवाजा खोलकर उसे नीचे उतारा, लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। घटना की जानकारी मिलते ही गांव में लोगों की भीड़ जुट गई और पुलिस तथा मायके पक्ष को सूचना दी गई।

अक्षय कुमार ने घर पर अधिक स्मार्ट, सहज और स्वास्थ्यप्रद टेक्नोलॉजी लाने के लिए एसर के साथ साझेदारी की

मुंबई। ग्लोबल टेक्नोलॉजी कंपनी एसर ने बॉलीवुड स्टार अक्षय कुमार को अपना नया ब्रांड एंबेसडर बनाया है। यह साझेदारी ऐसे समय में हुई है जब कंपनी दुनिया भर में अपने नवाचार के 50 साल और भारत में अपनी उपस्थिति के 27 साल पूरे कर रही है। पर्सनल कंप्यूटिंग से आगे बढ़कर आधुनिक घरों के लिए उत्पादों का दायरा बढ़ा रही इस कंपनी का अक्षय कुमार के साथ जुड़ना, उनके डायनैमिक व प्रदर्शन-केंद्रित व्यक्तित्व और एसर की वर्षों पुरानी तकनीकी विरासत का एक सही मेल प्रस्तुत करता है। 'हाउस ऑफ एसर' के तहत एसर की तकनीक और एसरप्योर के होम अप्लायंसेस को एक ही छत के नीचे लाया गया है, जिसका लक्ष्य दैनिक जीवन को अधिक स्मार्ट, आसान और स्वस्थ बनाना है।

अक्षय कुमार, जो फिल्मों, यात्रा, फिटनेस और परिवार के बीच एक व्यस्त दिनचर्या का संतुलन बनाते हैं, के लिए तकनीक दैनिक जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बन गई है। यह साझेदारी उनके इस विश्वास को दर्शाती है कि तकनीक को जीवन को उलझाने के बजाय आसान बनाना चाहिए, चाहे वह लोगों को काम करने, आराम करने, सहज रहने या अपने घरों को अधिक कुशलता से प्रबंधित करने में मदद करना ही क्यों न हो। एसर के साथ अपने जुड़ाव पर बात करते हुए अक्षय कुमार ने कहा, ₹ मेरा जीवन सदैव निरंतर व्यस्तता से भरा रहता है। इसमें काम, ट्रैवल, फिटनेस और परिवार सब शामिल है। इसलिए जब मैं घर लौटता हूँ, तो चाहता हूँ कि चीजें बिल्कुल आसान हों। तकनीक को हमारे जीवन को सहज बनाना चाहिए, न कि हमारी उलझनें और बढ़ाए। एसर की मुझे सबसे अच्छी बात यह लगती है कि यह लोगों की बदलती जरूरतों के हिसाब से खुद को ढालती आई है। 'हाउस ऑफ एसर' ऐसी तकनीक को सामने लाता है जो आपकी रोजमर्रा की जिंदगी का सहज हिस्सा बन जाती है, फिर चाहे बात आपके काम की हो, मनोरंजन की हो या घर पर रहने के अंदाज की। यही वजह है कि एसर के साथ जुड़कर मुझे बहुत खुशी हो रही है।

हाउस ऑफ एसर ब्रांड के लगातार विस्तार करते इकोसिस्टम को प्रदर्शित करता है, जो लैपटॉप और कंप्यूटिंग प्रोडक्ट्स को टेलीविजन, एयर कंडीशनर, वॉशिंग मशीन और अन्य होम सॉल्यूशंस के साथ एक मंच पर लाता है। तकनीक को केवल अलग-अलग प्रोडक्ट्स के रूप में देखने के बजाय, यह अवधारणा उन्हें एक कनेक्टेड होम एक्सपीरियंस के हिस्से के रूप में एक साथ लाती है।

यह साझेदारी एसर के लिए भी एक मील के पत्थर के क्षण पर हुई है। वैश्विक स्तर पर 50 वर्षों की विरासत और भारत में 27 वर्षों की उपस्थिति के साथ, ब्रांड उपभोक्ताओं की बदलती जरूरतों और तकनीक के साथ लगातार विकसित हुआ है। इसमें अक्षय कुमार की अपनी यात्रा के साथ एक सार्थक समानता देखने को मिलती है। दोनों ही इसलिए लंबे समय से टिके हुए हैं क्योंकि उन्होंने समय के साथ कदम से कदम मिलाया है। अक्षय ने बिना किसी एक छवि में बंधे विभिन्न शैलियों और पीढ़ियों में काम किया है, जो ब्रांड की सोच में भी झलकता है। जो बात दोनों को जोड़ती है, वह है समय के साथ बने रहते हुए लगातार विकसित होने की भावना। एसर इंडिया ग्रुप के प्रेसिडेंट और मैनेजिंग डायरेक्टर हरीश कोहली ने कहा, वैश्विक स्तर पर 50 वर्षों और भारत में 27 वर्षों से, एसर ने उपभोक्ताओं की बदलती जरूरतों के साथ खुद को लगातार ढाला है। आज तकनीक अब सिर्फ डेस्क तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह हमारे काम करने, आराम करने, मनोरंजन करने और जीने के तरीके का एक अभिन्न अंग बन चुकी है। 'हाउस ऑफ एसर' इस विकास को एक साथ लाता है, एक ऐसा घर बनाता है जहाँ तकनीक को दैनिक जीवन को अधिक स्मार्ट, आसान और स्वस्थ बनाने के लिए डिजाइन किया गया है। अक्षय कुमार प्रदर्शन, अनुशासन, विश्वसनीयता और निरंतर विकास जैसे गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो उन्हें एसर के इस नए अध्याय के लिए एक स्वाभाविक साझेदार बनाते हैं। अक्षय कुमार का हाउस ऑफ एसर से जुड़ना ब्रांड के लिए एक नई शुरूआत है। इसके साथ ही एसर की 50 सालों की बेहतरीन तकनीक अब सीधे लोगों के घरों तक पहुँच रही है। इस नई शुरूआत के लिए अक्षय कुमार से अधिक उपयुक्त ब्रांड एंबेसडर भला कौन हो सकता था? वे एक ऐसे कलाकार हैं जो हर दौर, हर पीढ़ी और हर तरह के दर्शकों के बीच हमेशा पसंद किए गए हैं, जो समय के साथ खुद को बदलते रहे हैं, फिर भी आज भी उतने ही लोकप्रिय हैं।

श्रीराम फार्म सोल्यूशन्स ने चार नए कृषि उत्पाद किए लॉन्च

मोतिहारी। श्रीराम फार्म सोल्यूशन्स ने फसल सुरक्षा, हाइब्रिड सीड और वैजीटेबल सीड सेगमेंट में चार नए उत्पाद लॉन्च किए। इनमें श्रीराम सेनकुशा, श्रीराम एडेलॉन, रबी मक्का हाइब्रिड श्रीराम 9662 और करेले का हाइब्रिड बीज श्रीराम साम्भा शामिल हैं। श्रीराम सेनकुशा उच्च-मूल्य वाली कृषि एवं बागवानी फसलों को लेपिडोप्टेरन कीटों एवं थ्रिप्स से सुरक्षा प्रदान करता है। श्रीराम एडेलॉन मक्का की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए तैयार किया गया है। श्रीराम 9662 जल्दी बुवाई के समय शानदार परिणाम देता है, जबकि श्रीराम साम्भा में वायरल बीमारियों और डाउनी मिल्ड्यू के लिए बेहतर सहनशीलता है। श्रीराम फार्म सोल्यूशन्स के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर और बिजनेस हेड संजय छाबड़ा ने कहा, हम आधुनिक बीजों, फसल सुरक्षा और पोषण समाधानों को सीधे किसानों की पहुंच में लेकर आए हैं, इससे वे न सिर्फ. बेहतर फसलें उगा सकेंगे बल्कि अपने भविष्य को भी सशक्त बना सकेंगे।

प्रसून जोशी ने अमिताभ बच्चन संग रचनात्मक साझेदारी को याद किया

पटना। गीतकार, कवि और लेखक प्रसून जोशी हाल ही में ह्यकौन बनेगा करोड़पति सीजन 18 में गायिका सुनीधी चौहान के साथ शामिल हुए। उन्होंने अमिताभ बच्चन के साथ अपने लंबे रचनात्मक जुड़ाव और कविता व हिंदी भाषा के प्रति साझा प्रेम को याद किया। प्रसून जोशी ने कहा कि कौन बनेगा करोड़पति की हॉट सीट पर अमिताभ बच्चन के सामने बैठना उनके लिए अलग और यादगार अनुभव रहा। उन्होंने सीजन की थीम ह्यसोचना पड़ेगा से जुड़ते हुए कहा कि नए जवाब और नजरिए के लिए ठहरकर सोचना जरूरी है। कौन बनेगा करोड़पति सीजन 18 सोमवार से शुक्रवार रात 9 बजे, सिर्फ. सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन और सोनी लिव पर प्रसारित होता है।

मैजिकब्रिक्स और रॉयल इंस्टीट्यूशन ऑफ चार्टर्ड सर्वेयर्सइंडिया ने डेटा-संचालित रियल एस्टेट रिसर्च को आगे बढ़ाने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

मुंबई। मैजिकब्रिक्स और रॉयल इंस्टीट्यूशन ऑफ चार्टर्ड सर्वेयर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ने बुधवार, 19 अगस्त 2026 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसका उद्देश्य रियल एस्टेट रिसर्च, बाजार अध्ययन और इंडेक्स के क्षेत्र में सहयोग करना है। इस साझेदारी के तहत मैजिकब्रिक्स के संरचित रियल एस्टेट डेटा और RICS की रिसर्च व उद्योग विशेषज्ञता को एक साथ लाया जाएगा। यह गैर-व्यावसायिक सहयोग रिसर्च-आधारित जानकारियों को विकसित करने और रियल एस्टेट क्षेत्र में ज्ञान के आदान-प्रदान को मजबूत करने पर केंद्रित होगा। इस साझेदारी के अंतर्गत सह-लेखित रिसर्च रिपोर्ट, श्वेत पत्र (व्हाइट पेपर), बाजार अध्ययन और रियल एस्टेट इंडेक्स शामिल होंगे, जिन्हें सांख्यिकीय और आर्थिक विश्लेषण का समर्थन प्राप्त होगा। इसमें आपसी सहमति से अतिरिक्त रिसर्च और ज्ञान-साझाकरण पहलों की भी गुंजाइश है, जिसमें RICS स्कूल ऑफ बिल्ट एनवायरनमेंट जैसी RICS संबद्ध संस्थाओं के साथ की जाने वाली परियोजनाएं भी शामिल हैं। इस सहयोग के तहत, मैजिकब्रिक्स स्वच्छ और संरचित रियल एस्टेट डेटा उपलब्ध कराएगा और रिपोर्ट तैयार करने का नेतृत्व करेगा, जबकि RICS और उससे संबद्ध संस्था इसकी समीक्षा, सत्यापन और विशेषज्ञतात्मक इनपुट प्रदान करेंगी। दोनों संगठन मिलकर रिपोर्ट जारी करने की योजना बनाएंगे, जिसमें शिक्षा जगत, नीति-निर्माताओं और उद्योग हितधारकों के साथ संभावित जुड़ाव भी शामिल होगा। इस अवसर पर, मैजिकब्रिक्स के चीफ मार्केटिंग ऑफिसर और बिजनेस हेड, प्रसून कुमार ने कहा, रियल एस्टेट क्षेत्र अब पहले से कहीं अधिक विश्वसनीय डेटा और गहरी बाजार समझ पर निर्भर हो रहा है। RICS के साथ यह सहयोग मैजिकब्रिक्स के रियल एस्टेट डेटा को RICS की रिसर्च और विश्लेषणात्मक विशेषज्ञता के साथ जोड़ता है, ताकि रिसर्च रिपोर्ट, इंडेक्स और बाजार अध्ययन के माध्यम से संरचित जानकारियां विकसित की जा सकें। यह साझेदारी पूरे रियल एस्टेट इकोसिस्टम में अधिक सुविज्ञ चर्चाओं को समर्थन देगी। संयुक्त रूप से तैयार किए गए आउटपुट दोनों संगठनों के बीच सहमत सह-ब्रांडिंग के साथ प्रकाशित होंगे। RICS अपने प्लेटफॉर्म के माध्यम से रिपोर्ट लॉन्च को सुगम बना सकता है, जबकि दोनों संगठन प्रासंगिक उद्योग और नीति संबंधी आयोजनों के साथ रिलीज को संरेखित कर सकते हैं।

पेपर लीक रोकने को STF की सख्ती, परीक्षा केंद्र बनने से पहले होगी कॉलेजों की गुप्त जांच

लखनऊ (उत्तरशक्ति)। प्रतियोगी परीक्षाओं में पेपर लीक और नकल पर रोक लगाने के लिए सरकार ने परीक्षा केंद्रों के चयन को लेकर सख्ती बढ़ा दी है। अब सरकारी और निजी कॉलेजों को परीक्षा केंद्र बनाने से पहले [illegible] गुप्त जांच कराई जाएगी। STF की टीम कॉलेज संचालकों और कर्मचारियों का आपराधिक रिकॉर्ड खंगालने के साथ ही मौके पर पहुंचकर कॉलेज का भौतिक सत्यापन करेगी। जांच के दौरान परीक्षा केंद्र की व्यवस्थाओं, इंटरनेट कनेक्शन और CCTV कैमरों की स्थिति भी परखी जाएगी। CCTV ऑपरेटरों की भूमिका और उनके रिकॉर्ड की भी जांच होगी। जांच में किसी तरह की संदिग्ध गतिविधि या व्यक्ति सामने आने पर उसकी सूची तैयार कर STF मुख्यालय भेजी जाएगी। STF की क्लीन चिट मिलने के बाद ही संबंधित कॉलेज को प्रतियोगी परीक्षा का केंद्र बनाया जा सकेगा। इस व्यवस्था का उद्देश्य परीक्षा केंद्रों की सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करना और पेपर लीक जैसी घटनाओं पर प्रभावी ढंग से अंकुश लगाना है।

टेक्निप एनर्जीज इंडिया ने प्रशिक्षणार्थी का स्वागत किया

मुंबई। टेक्निप एनर्जीज इंडिया ने 2026 बैच के नए प्रशिक्षणार्थी का स्वागत किया है। कंपनी ने कहा कि यह पहल भविष्य के लिए तैयार प्रतिभाओं को विकसित करने और ऊर्जा उद्योग के भविष्य पर सकारात्मक प्रभाव डालने वाले विविध एवं समावेशी कार्यबल के निर्माण की उनकी प्रतिबद्धता को मजबूत करती है। इस वर्ष के प्रशिक्षणार्थी कार्यक्रम की प्रमुख विशेषता इसमें विविधता का लगातार मजबूत होना है। कंपनी ने कहा कि कंपनी के वैश्विक विविधता रोडमैप के अनुरूप, युवा प्रशिक्षुओं में कुल विविधता का प्रतिशत 63% है। यह इंजीनियरिंग क्षेत्र में विविध प्रतिभाओं को आकर्षित करने और उन्हें समान अवसर उपलब्ध कराने की कंपनी की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। भारत टेक्निप एनर्जीज के वैश्विक संचालन में रणनीतिक भूमिका निभाता है। उभरती प्रतिभाओं में निवेश करने की इंजीनियरिंग उत्कृष्टता प्रदान करने की क्षमता मजबूत हो रही है और साथ ही अधिक टिकाऊ भविष्य की दिशा में आगे बढ़ने में भी मदद मिल रही है। मदन चंद्रशेखरन, पीपल एंड कल्चर निदेशक, टेक्निप एनर्जीज इंडिया ने कहा, हमारी सफलता की शुरुआत हमारे लोगों से होती है। लगातार तीन वर्षों से हमारे ग्रेजुएट हायरिंग कार्यक्रम में 60% से अधिक महिलाओं की भागीदारी यह दर्शाती है कि हम ऐसे अवसर उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जहां प्रतिभाएं आगे बढ़ सकें, नेतृत्व कर सकें और अपना विकास कर सकें। कंपनी के वार्षिक कैंपस भर्ती कार्यक्रम के माध्यम से चयनित 90 से अधिक प्रशिक्षणार्थी एक वर्ष के संरचित विकास कार्यक्रम में शामिल होंगे। इस दौरान उन्हें तकनीकी प्रशिक्षण, मेंटरशिप और व्यावहारिक परियोजनाओं पर काम करने का अनुभव दिया जाएगा। इससे वे टेक्निप एनर्जीज के डी-कार्बोनाईजेशन मिशन में योगदान देंगे और अधिक टिकाऊ भविष्य को आकार देने में मदद करेंगे। देवेंद्र कुमार, प्रबंध निदेशक, टेक्निप एनर्जीज के इंडिया एवं एपीएसी ने कहा, जब विविध दृष्टिकोण एक साथ आते हैं, तो नवाचार को बढ़ावा मिलता है। हमें प्रशिक्षुओं की नई पीढ़ी का स्वागत करते हुए गर्व है, जो नए विचार, जिज्ञासा और महत्वाकांक्षा लेकर आई है। आज समावेशी प्रतिभा विकास में निवेश करके हम एक सहयोगात्मक और भविष्य के लिए तैयार कार्यबल तैयार कर रहे हैं, जो टिकाऊ समाधान तैयार करने और उन्हें लागू करने में मदद करेगा।

काशी में ओडिशा का रंग-रस, पर्यटन रिश्तों में घुलेगी मिठास

ओडिशा परब में संस्कृति, स्वाद और शिल्प का संगम, जयवीर बोले—काशी-पुरी और अयोध्या-कोणार्क बनेंगे साझा पर्यटन की नई कड़ी

वाराणसी। बाबा विश्वनाथ की नगरी काशी में इन दिनों ओडिशा की संस्कृति का रंग घुला है। कहीं ओडिसी की थिरकन है तो कहीं संबलीपुरी लोकधुनों की गूंज। छेना पोड़ा और रसगुल्ले की मिठास के साथ ओडिशा के हस्तशिल्प और हथकरघे भी काशीवासियों को अपनी ओर खींच रहे हैं। दीनदयाल हस्तकला संकुल में 22 से 24 अगस्त तक आयोजित ओडिशा परब दरअसल दो राज्यों की संस्कृतियों के मिलन से आगे बढ़कर पर्यटन और आर्थिक रिश्तों की नई पटकथा लिखता नजर आ रहा है।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि ओडिशा परब महज तीन दिन का सांस्कृतिक उत्सव नहीं, बल्कि उत्तर प्रदेश और ओडिशा के बीच पर्यटन सहयोग के नए अध्याय की शुरूआत है। दोनों राज्यों की पर्यटन विरासत एक-दूसरे की पूरक है। काशी और पुरी की आध्यात्मिकता, अयोध्या और कोणार्क की सांस्कृतिक विरासत को एक साझा पर्यटन दृष्टि से जोड़ा जा सकता है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश की आध्यात्मिकता, लोक संस्कृति, विरासत और खानपान जहां पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, वहीं ओडिशा की समुद्री विरासत, मंदिर, प्रकृति, जनजातीय संस्कृति, हस्तशिल्प और हथकरघा अपनी अलग पहचान रखते हैं। दोनों राज्य मिलकर नए टूरिज्म सर्किट, संयुक्त प्रचार अभियान, ट्रैवल ट्रेड मीट और बी2बी संवाद को बढ़ावा दे सकते हैं। जयवीर सिंह ने कहा कि लक्ष्य केवल पर्यटकों की संख्या बढ़ाना नहीं, बल्कि उन्हें दो राज्यों का एक अनुभव देना होना चाहिए। उत्तर प्रदेश आने वाला पर्यटक ओडिशा की खूबसूरती से परिचित हो और ओडिशा पहुंचने वाला पर्यटक काशी-अयोध्या की आध्यात्मिक विरासत का अनुभव करे। इससे पर्यटन के साथ होटल, परिवहन, हॉस्पिटैलिटी, हस्तशिल्प, खानपान और स्थानीय कारोबार को भी गति मिलेगी।

पर्यटन मंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में उत्तर प्रदेश में पर्यटन विकास, रोजगार और निवेश का मजबूत आधार बन रहा है। प्रदेश में पर्यटकों की संख्या लगातार बढ़ी है। वर्ष 2022 में करीब 32 करोड़, 2023 में 48 करोड़, 2024 में लगभग 65 करोड़ और 2025 में रिकॉर्ड करीब 156 करोड़ पर्यटकों का आगमन हुआ। वर्ष 2026 में जून तक 41 करोड़ से अधिक पर्यटक प्रदेश आ चुके हैं। उन्होंने कहा कि पर्यटन को विजन-2047 और वन ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी से जोड़कर आगे बढ़ाया जा रहा है। अब पर्यटन केवल तीर्थ और स्मारकों तक सीमित नहीं, बल्कि स्थानीय रोजगार, निवेश, शिल्प और बाजार को विस्तार देने वाला आर्थिक इंजन बन रहा है। जयवीर सिंह ने कहा कि सारनाथ की यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में पहचान उत्तर प्रदेश के पर्यटन के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इससे बौद्ध पर्यटन को वैश्विक स्तर पर नई ताकत मिली है और जापान समेत बौद्ध देशों से पर्यटकों को आकर्षित करने की संभावनाएं और मजबूत हुई हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में पर्यटन की दिशा अब बदल रही है। पर्यटक केवल मंदिर और स्मारक देखकर लौटे, इतना ही पर्याप्त नहीं। उसे उस शहर की संस्कृति, स्वाद, कला, शिल्प और जीवनशैली का अनुभव भी मिले। काशी की सिल्क, मुरादाबाद का पीतल, भदोही की कालीन और कन्नौज का इत्र इसी अनुभव आधारित पर्यटन का हिस्सा हैं।

ओडिशा परब में ओडिसी, गोटीपुआ, संबलीपुरी, घूमरा, ढेमसा और पाइका अखाड़ा जैसी प्रस्तुतियां ओडिशा की जीवंत लोक-सांस्कृतिक विरासत को काशी के सामने ला रही हैं। वहीं पारंपरिक व्यंजन पर्यटकों को ओडिशा के स्वाद से रूबरू करा रहे हैं। जयवीर सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एक भारत, श्रेष्ठ भारत के संकल्प को ऐसे आयोजन नई मजबूती देते हैं। काशी में ओडिशा का यह सांस्कृतिक पड़ाव यदि पर्यटन की नई साझेदारी में बदलता है तो इसकी गूंज केवल दोनों राज्यों के पर्यटन स्थलों तक नहीं, बल्कि रोजगार, कारोबार और सांस्कृतिक रिश्तों की जमीन तक पहुंचेगी।

राखी में फैशन का तड़का, कलाई पर चमकेगा अमेरिकन डायमंड वाला प्यार

वाराणसी। सावन की फुहारों के बीच अब बाजारों में रक्षाबंधन की आहट साफ सुनाई देने लगी है। दुकानों के बाहर सजे रंग-बिरंगे राखियों के स्टॉल, रोशनी में चमकते मोती और स्टोन, डिजाइनर राखियों की कतार और उनके बीच अपनी पसंद की राखी तलाशती महिलाओं की भीड़ ने बाजार को त्योहार के रंग में रंग दिया है। राखी की हर डोरी जैसे कोई कहानी कह रही है—कहीं बचपन की शरारतों की, कहीं भाई की कलाई पर बहन के भरोसे की तो कहीं दूर बैठे भाई तक प्रेम पहुंचाने की। इस बार रक्षाबंधन 28 अगस्त को मनाया जाएगा। पूर्णिमा तिथि 27 अगस्त की सुबह शुरू होकर 28 अगस्त की सुबह तक रहने के कारण पर्व की तारीख को लेकर कुछ भ्रम था, लेकिन उपलब्ध पंचांग संबंधी जानकारी के अनुसार 28 अगस्त को ही रक्षाबंधन मनाया जाएगा।

राखियों की ऐसी दुनिया, हर कलाई के लिए अलग पसंद

बाजार में राखियों की दुनिया इस बार पहले से कहीं ज्यादा रंगीन और विविध नजर आ रही है। पारंपरिक लाल-पीले धागों वाली राखियों से लेकर मोती, कुंदन, स्टोन, अमेरिकन डायमंड और फैंसी डिजाइन वाली राखियां दुकानों की शोभा बढ़ा रही हैं। बच्चों के लिए कार्टून कैरेक्टर और आकर्षक डिजाइन वाली राखियां खास आकर्षण हैं, जबकि युवतियां और महिलाएं स्टाइलिश और डिजाइनर राखियों को प्राथमिकता दे रही हैं। किसी दुकान पर छोटा-सा रुद्राक्ष लगा रक्षासूत्र आकर्षित कर रहा है तो कहीं भगवान गणेश, ओम, श्रीराम और अन्य धार्मिक प्रतीकों वाली राखियां पसंद की जा रही हैं। कुछ राखियां ऐसी हैं जिन्हें देखकर लगता है मानो कलाई पर कोई छोटा-सा आभूषण सजा दिया गया हो। राखी अब केवल धागे का नाम नहीं रही। वह फैशन, आस्था और भावनाओं का सुंदर संगम बन चुकी है।

महिलाओं की पसंद की राखियां, पहले देख रहीं डिजाइन फिर कीमत

बाजार में राखी खरीदने पहुंची महिलाओं में खासा उत्साह दिखाई दे रहा है। कोई भाई की पसंद के रंग को ध्यान में रखकर राखी तलाश रही है तो कोई उसके व्यक्तित्व के मुताबिक डिजाइन चुन रही है। दुकानदारों के सामने महिलाओं की सबसे आम जिज्ञासा यही है—ह्लकुछ नया दिखाइए।ह्व दुकानदार भी ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए राखियों की पूरी श्रृंखला सजाकर रख रहे हैं। एक तरफ कम कीमत वाली साधारण राखियां हैं तो दूसरी तरफ प्रीमियम लुक वाली कुंदन, मोती और अमेरिकन डायमंड राखियां भी उपलब्ध हैं। अलग-अलग बाजारों की रिपोर्टों में राखियों की कीमत कुछ रुपये से लेकर सैकड़ों रुपये तक बताई गई है।

इंडियन बैंक ने चेन्नई में मेगा रिटेल, कृषि एवं एमएसएमई क्रेडिट अभियान का आयोजन किया

मुंबई। इंडियन बैंक के फील्ड जनरल मैनेजर कार्यालय, चेन्नई ने FGM श्रीमती पद्मावती श्रीकांत के नेतृत्व में 21 अगस्त 2026 को मेगा रिटेल, कृषि एवं एमएसएमई क्रेडिट अभियान का सफल आयोजन किया। कार्यक्रम में बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी बिनोद कुमार तथा मुख्य महाप्रबंधक रिटेल एवं एमएसएमई, सुजय मल्लिक की गरिमामयी उपस्थिति रही।

अभियान के दौरान बिनोद कुमार ने विभिन्न क्षेत्रों के लाभार्थियों को ऋण स्वीकृति पत्र प्रदान किए। यह पहल रिटेल, कृषि एवं एमएसएमई क्षेत्रों को वित्तीय सहयोग प्रदान करने तथा ग्राहकों के सशक्तिकरण के प्रति इंडियन बैंक की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह अभियान देश को विकसित और आत्मनिर्भर बनाने के राष्ट्रीय संकल्प विकसित भारत के अनुरूप बैंक की प्राथमिकताओं को भी रेखांकित करता है। अभियान को ग्राहकों और व्यवसायिक समुदाय से उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली। इसके अंतर्गत ?2,080 करोड़ के ऋण प्रस्ताव जुटाए गए, जिनमें से 1,125 करोड़ के ऋण स्वीकृत किए गए और ?575 करोड़ का ऋण वितरण किया गया। इस अवसर पर बिनोद कुमार ने 46 लाभार्थियों को ऋण स्वीकृति पत्र भी प्रदान किए। इन लाभार्थियों को दिए गए ऋण की कुल राशि ?207 करोड़ रही, जिसमें रिटेल, कृषि और एमएसएमई सहित विभिन्न क्षेत्रों के ग्राहक शामिल रहे।

बुद्ध की धरती पर जापान ने महसूस की काशी की आत्मा, गंगा आरती में दिखी भारत की आध्यात्मिक तस्वीर

0–यूनेस्को विश्व धरोहर बनने के बाद सारनाथ पहुंचा यामानाशी के राज्यपाल का 75 सदस्यीय दल

0–धामेक–चौखंडी स्तूप पर थमीं जापानी मेहमानों की निगाहें, नमो घाट पर गंगा आरती ने बांधा मन

वाराणसी. काशी को समझना हो तो उसके घाटों पर उतरना पड़ता है और सारनाथ को महसूस करना हो तो वहां कुछ पल ठहरना पड़ता है। शनिवार को जापान के यामानाशी प्रांत के राज्यपाल कोटारो नागासाकी के नेतृत्व में पहुंचे 75 सदस्यीय जापानी प्रतिनिधिमंडल ने कुछ ऐसा ही अनुभव किया। सारनाथ की शांत धरती पर बुद्ध के पदचिह्नों का अनुसरण करते हुए विदेशी मेहमान इतिहास के करीब पहुंचे तो शाम को गंगा के किनारे आरती की रोशनी में उन्हें भारत की जीवंत आध्यात्मिक परंपरा दिखाई दी। दो दिवसीय वाराणसी दौरे पर पहुंचे जापानी प्रतिनिधिमंडल का एयरपोर्ट पर स्वागत किया गया। प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह के साथ दल काशी पहुंचा। इसके बाद मेहमानों ने भगवान बुद्ध की प्रथम उपदेश स्थली सारनाथ का रुख किया। यहां धामेक स्तूप और चौखंडी स्तूप समेत बुद्ध से जुड़े प्रमुख स्थलों की ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक विरासत को करीब से जाना।

यूनेस्को की मुहर के बाद सारनाथ का पहला खास आकर्षण

सारनाथ की यह यात्रा इसलिए भी खास रही क्योंकि इसे हाल ही में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में स्थान मिला है। इस अंतरराष्ट्रीय पहचान के बाद सारनाथ देश का 45वां और उत्तर प्रदेश का चौथा विश्व धरोहर स्थल बना है। जापान जैसे बौद्ध परंपरा से गहरे जुड़े देश के प्रतिनिधिमंडल का इसी दौर में सारनाथ पहुंचना दोनों देशों के साझा बौद्ध संबंधों की तस्वीर को और गहरा करता है। धामेक स्तूप के सामने पहुंचते ही जापानी मेहमानों की निगाहें इतिहास की

उस विरासत पर टिक गईं, जहां बुद्ध ने अपने प्रथम उपदेश से धम्मचक्र प्रवर्तन की शुरूआत की थी। प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने ऐतिहासिक स्थलों को करीब से देखा, जानकारी ली और कई पलों को कैमरे में कैद किया। सारनाथ में उस वक्त इतिहास और वर्तमान एक ही फ्रेम में दिखाई दिए—बुद्ध की हजारों साल पुरानी विरासत के सामने आधुनिक जापान के प्रतिनिधि।

यह भारत-जापान के साझा आध्यात्मिक रिश्ते को महसूस करने जैसा

जापानी प्रतिनिधिमंडल की सदस्य युमी साइटो ने सारनाथ यात्रा को बेहद खास अनुभव बताया। उनके अनुसार यूनेस्को विश्व धरोहर का दर्जा मिलने के बाद सारनाथ की पावन धरती पर पहुंचना और भी विशेष रहा। भगवान बुद्ध के प्रथम उपदेश से जुड़े स्थलों के दर्शन तथा धामेक और चौखंडी स्तूप को करीब से देखना भारत और जापान के सदियों पुराने साझा आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को महसूस करने जैसा अनुभव रहा। यानी जापानी मेहमानों के लिए सारनाथ महज कोई पुरातात्विक स्थल नहीं रहा। यह वह जगह बनी, जहां जापान ने अपने बौद्ध अतीत की एक कड़ी को भारत की धरती पर फिर से महसूस किया।

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि सारनाथ को यूनेस्को विश्व धरोहर का दर्जा मिलने से उत्तर प्रदेश की बौद्ध पर्यटन पहचान को वैश्विक मजबूती मिली है। यामानाशी प्रांत के प्रतिनिधिमंडल का सारनाथ आगमन भारत और जापान के सदियों पुराने बौद्ध एवं सांस्कृतिक संबंधों को और प्रगाढ़ करने का महत्वपूर्ण अवसर है। उनके मुताबिक इससे जापान के अधिक से अधिक पर्यटकों को उत्तर प्रदेश की बौद्ध विरासत, ऐतिहासिक स्थलों और आध्यात्मिक परंपराओं से परिचित कराने में मदद मिलेगी।

सारनाथ की शांति से नमो घाट की रोशनी तक

सारनाथ की ऐतिहासिक यात्रा के बाद जापानी प्रतिनिधिमंडल ने नमो घाट का रुख किया। यहां गंगा के तट पर होने वाली भव्य आरती का दृश्य देखकर विदेशी मेहमान अभिभूत नजर आए। क्रूज से गंगा आरती का दृश्य देखते समय घाटों पर जगमगाते दीप, मंत्रोच्चार और घंटियों की गूंज ने वातावरण को आध्यात्मिक बना दिया। एक ही दिन में जापानी मेहमानों ने भारत के दो चेहरे देखे—सारनाथ में बुद्ध की मौन शांति और गंगा तट पर सनातन परंपरा की जीवंत ऊर्जा। कई सदस्यों ने आरती और घाटों के दृश्य को अपने कैमरों में कैद किया। उनके चेहरों पर कौतूहल और आकर्षण साफ दिखाई दे रहा था। काशी ने उन्हें केवल पर्यटन स्थल नहीं दिखाया, बल्कि अपनी संस्कृति को जीने का अवसर दिया।

ताज में काशी ने खोला हुनर का खजाना

शाम को होटल ताज में आयोजित डिनर के दौरान जापानी मेहमानों को भारतीय कला, संगीत और पारंपरिक हस्तशिल्प से रूबरू कराया गया। काशी की सदियों पुरानी शिल्प परंपरा को सामने रखने के लिए वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट (डऊड्ढ) और जीआई टैग वाले उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई गई। गुलाबी मीनाकारी, सॉफ्ट स्टोन कार्विंग, लकड़ी के खिलौने और बनारसी सिल्क की साड़ियों के लाइव स्टॉल ने मेहमानों को आकर्षित किया। कथक, लोकनृत्य और शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुतियों ने शाम को काशी के रंग में रंग दिया। बुद्ध की धरती से बनारसी बुनकर के हुनर तक—काशी ने जापान को अपनी विरासत का पूरा विस्तार दिखा दिया।

पर्यटन से आगे बढ़ती रिश्तों की डोर

यामानाशी प्रांत के राज्यपाल के नेतृत्व में आए इस प्रतिनिधिमंडल में जापान के प्रतिष्ठित कारोबारी और औद्योगिक जगत से जुड़े प्रतिनिधियों की मौजूदगी इस यात्रा को केवल सांस्कृतिक भ्रमण से आगे ले जाती है। बौद्ध विरासत, आध्यात्मिक पर्यटन, हस्तशिल्प और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के जरिए भारत-जापान संबंधों के लिए नए अवसरों की जमीन भी तैयार होती दिखाई देती है। सारनाथ अब केवल पुरातत्व की किताब का एक अध्याय नहीं रहा। यूनेस्को की वैश्विक मुहर और जापान जैसे बौद्ध देश के प्रतिनिधिमंडल की यात्रा ने इसे अंतरराष्ट्रीय पर्यटन के नए केंद्र के रूप में स्थापित करने की संभावनाओं को और मजबूत किया है। और काशी की खूबी यही है—सुबह बुद्ध की शांति से दिन शुरू होता है और शाम गंगा की आरती में खत्म। बीच में बनारसी सिल्क की चमक, कारीगर के हाथों की कला और संगीत की स्वर-लहरियां। जापानी मेहमानों ने एक दिन में शायद यही पूरी काशी देख ली।